अब तो नींद खुले

(ऐतिहासिक नाटक)

राजाराम शुक्ल

सहयोगी मुद्रण तथा प्रकाशन सहकारी समिति लि०

214/180/ए4ए नागवासुकि दारागंज,

इलाहाबाद-211006

'अब तो नींद खुले'

प्रकाशक
सहयोगी मुद्रण तथा प्रकाशन सहकारी समिति लि०
२१४/१८०/ए/4ए, नागवासुकि दारागंज
इलाहाबाद-२११००६

वितरक
साहित्य संगम
१०० नया लूकरगंज-२११००१

आवरण - अभिनव गुप्त

प्रथम संस्करण १९९८

मूल्य- अस्सी रुपए (सजिल्द)
साठ रुपए (पेपर बैक)

कम्प्यूटर कम्पोजिंग
दुर्गा कम्प्यूट्रॉनिक्स
735/1, जायसवाल मार्केट
कटरा, इलाहाबाद

मुद्रक
एकेडमी प्रेस
दारागंज, इलाहाबाद (उ०प्र०)

गाँधी, सुभाष, नेहरू, सदृश
जाने अनजाने भारत के
स्वतन्त्रता संग्राम में
जूझने वाले अनेक हुतात्माओं
की पुण्य स्मृति में
उन्हीं को।

"अब तो नींद खुले"

नाटक

रचयिता राजाराम शुक्ल

आधार दृष्टि

मवेदनशील मन कही से कोई प्रेरणा ले सकता है और रचनाशीलता उसे किसी भी रूप मे व्यक्त कर सकती है। फिर दृश्यकाव्य और श्रव्य-काव्य के रूप मे नाटक और कविता भारतीय काव्य-शास्त्र मे युगो से जुडे रहे हैं। डॉ राजाराम शुक्ल का नाटककार के रूप मे यह नाटक मुझे पहली बार परिचित करा रहा है। नाटक यानी 'अब तो नीद खुले'' नाम से ही स्पष्ट है कि यह रचना उद्बोधन की मन स्थिति से उपजी है जो आज की बदली हुई मानसिकता से कुछ भिन्न दिखाई पडेगी। आज संघर्ष और प्रतिवाद की उग्रता मूल्य दृष्टि को झकझोर और उखाड फेकना चाहती है भले ही नए जीवन मूल्य उसके आगे स्पष्ट न हो। शुक्लजी ने उस ऑधी से वचकर राष्ट्रीय सग्राम के दौर से अपने को जोडकर देश-प्रेम की धारा मे स्वय अवगाहन किया है और उनका विश्वास है कि आज भी वह धारा अत्याधुनिक युग मे भी भारतवर्ष को बहुत कुछ देने मे सक्षम है। व्यक्तित्व के खरे-खोटे की पहचान तपस्या और त्याग की कठोर भूमि पर जिस तरह से हो सकती है उस तरह स्वार्थ की ऑधी मे उड़ते हुए सभव नही। राष्ट्रीय सघर्ष मे विदेशी सत्ता से जूझना एक ओर सरल भी था और कठिन भी। सरल इसलिए कि शत्रु के विषय मे कोई सदेह नही था, कठिन इसलिए कि नृशस एवं निर्मम होने में उसकी चालाकी भी उसे रोक नही पाती थी।

बहुधा वह दूना भयावह हो उठता था। स्वातन्त्रोत्तर काल मे राष्ट्रीय चेतना धीरे-धीरे अनाम होती गई और अन्तत जिस ओर उसका विकास हुआ वह विश्वमानव के आकर्षण से इतना आपूरित था कि राष्ट्रीयता उसे अनावश्यक लगने लगी। इस दिशा मे भी उसे मोहभग होता दिखायी देता है। इसलिए भले ही बहुतो को उद्बोधनात्मक स्वर उतना प्रेरक न लगे जितना समकालीनता चाहती है पर नए सकट के गहराते हुए माहौल मे वह एक बार फिर आत्मदान और बलिदान की ओर प्रवृत्त हो जाय, शुक्लजी ने इसी विश्वास पर इस नाटक के लेखन और प्रकाशन का सकल्प किया है। नींद का खुलना हर प्राणी चाहता है, पर हर सुबह उसके संकट को और गहराती हुई लगे ऐसा वह कदापि नही चाहेगा। यथार्थ की पकड़ उसे कहाँ तक समर्थ बनाती है और उसकी नाट्य कला उसे कितने ऊँचे स्तर तक ले जाने की क्षमता रखती है यह सुधीजन ही प्रमाणित करेगे। नाटक 'लीला' के रूप मे आज भी जितना लोक ग्राह्य है, उससे सिद्ध होता है, भारतीय मन या तो सगीत से अभिभूत होता है या नाट्य-रस से। आज का युग रस की जगह सघर्ष को देता है अत कला भी जोखिम भरी और प्रयोगशील होती जा रही है

शुक्ल जी ने राजमार्ग अपनाने में हित समझा और देश-प्रेम की सुपरिचित भूमि पर अपने कथानक को विकसित किया। ग्रंथ के सम्बन्ध मे पढ़कर उनकी लेखनी की मर्मव्यथा और रचनाकथा समझने मे सामान्य पाठक को भी कोई कठिनाई न होगी। कवि सुलभ आत्मीयता और कल्पनाशीलता से उन्होंने अपने कृतित्व को तरह-तरह से सवारा सजाया है। भाषा की सहज गति और दीप्त विचार-प्रवाह अपनी ओर स्वयं आकृष्ट करने मे समर्थ होंगे, इसमे मुझे कोई सदेह नही। तनाव की स्थिति मे अपनी इस नाट्य-कृति को सरस्वती का जो वरदान कवि के साक्ष्य से स्वत: प्राप्त हो चुका है, उससे विनय और सेवा का भाव ही उपजता है, अहकार और चालाकी का नही। यह दूसरी बात है कि यह भाव उत्तरोत्तर अभावग्रस्त होता जा रहा है। आज के मनुष्य के समक्ष मूल्य सकट इसीलिए इतना गहराने लगा है कि उसे आस्था की जगह अनास्था प्रेरणा देने लगी है।

भारत देश महान् रहा है और महान् है, आक्रामको और अत्याचारियो को इस देश ने सहज ही उतार फेंका है। जो इसकी भावधारा में डूबा वह इसका हो गया।

लेखक का ऐसा स्वर अदम्य आस्था का परिचय देता है पर वही यह भी अनुभव करता है कि अपने देश को दो भागों मे बाटना पडा—

"एक ही मा के दो पुत्र परस्पर इतने विरोधी हो गए कि महायुद्ध पर उतारू हो गए, ज्योति और एकता का प्रतीक महात्मा गाधी इस अधकार और उन्माद का निशाना बना।"

शुक्ल जी ने अपने नाटक मे "कलह, विघटन और सम्प्रदाय की अग्नि के ताप को पहचाना है, इसमे सदेह नही। १८४८ से १९४८ तक की एक शताब्दी का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य किसी भी नाटक के लिए चुनौती कहा जा सकता है, यदि उसमे नाटकीयता का पूरा सचार हो सके। मैने इस नाटक को अभिनीत होते नही देखा, कभी देखने की इच्छा बनी रहेगी।

अध्ययनशीलता के साथ सुलिखित यह नाटक मूलत: "गॉधी और सुभाष" के द्वन्द्व से अपनी राष्ट्रीय चेतना ग्रहण करता है, जिसमे अन्तत: द्वन्द्व का पर्यावसान हो जाता है। शहीदो को श्रद्धाजलि के रूप मे इसे ग्रहण करना सही दृष्टि होगी। लेखक ने विदेशी पात्रो की आधार कल्पना की है और तथ्यो से उन्हें समन्वित किया है उसकी साधुता ही साधु वेश मे अवतरित होकर पात्र बन गई है।

डा० जगदीश गुप्त
पूर्व अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

दिनाक ५.५.८६

अब तो नींद खुले

सम्मति

हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार पडित राजाराम शुक्ल द्वारा रचित ऐतिहासिक नाटक ''अब तो नीद खुले'' हिन्दी नाटक साहित्य की एक अनुपम कडी है। शुक्ल जी ने भारतीय स्वतत्रता सग्राम के लगभग सौ वर्षों के इतिहास को अपनी अद्भुत कल्पना-शक्ति तथा रचनात्मक प्रतिभा से प्रस्तुत नाटक मे जीवन्त कर दिया है। यद्यपि कथानक का आयाम बहुत विस्तृत है किन्तु पूरे नाटक मे स्वतत्रता की अदम्य लालसा है, और वीरता का उद्घोष आद्यन्त गूँजता रहता है। इसीलिए कथानक का काल और देश व्यापक होते हुए भी सूत्रबद्धता बनी रहती है उसमे कही बिखराव नही आता है। इस नाटक मे ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में एकता की जो समस्या उठायी गई है, वह आज भी प्रासगिक है। साम्प्रदायिकता की सकुचित भावना के कारण देश का विभाजन हुआ। उसकी त्रासदी आज भी समस्त भारतवासी झेल रहे है इस तरह के हादसे पुन न घटित हो इसके लिए हमे इतिहास की अपनी भूलो की पुनरावृत्ति से हरदम बचना चाहिए। इस तरह की राष्ट्रीय भावना से युक्त रचनाएँ हमे भारतीय सस्कृति के सद्पक्ष से परिचित कराती हैं और भ्रातृत्व, समता, सहिष्णुता एव अहिसा का सन्देश देती है। आज की विघटनकारी परिस्थितियो मे राष्ट्रीय एकता के सूत्रो को ऐतिहासिक परिपेक्ष्य मे तलाश करने वाली रचनाएँ निश्चित रूप मे उपयोगी है। शुक्लजी की प्रस्तुत नाट्यकृति इसी कोटि की रचना है। सरल प्रवाहपूर्ण और परिमार्जित भाषा में निबद्ध सवाद तथा उचित नाटकीय संकेत प्रस्तुत कृति को और भी प्रभावशाली बना देते है। कथ्य और शिल्प की बनावट के साथ ही लेखक ने अपनी रचना को रोचक और मनोरजक भी बनाया है। इसमे व्यग-विनोद का भी हल्का पुट है। इस नाटक को रगमच पर प्रभावशाली ढग से प्रस्तुत किया जा सकता है। शिक्षित, अशिक्षित सभी तरह के लोग इस नाटक का आस्वादन कर सकते है।

शुक्लजी की इस कृति को हिन्दी पाठको के बीच आदर और सम्मान मिलेगा इस आशा के साथ मै उन्हे सुधावाद देता हूँ।

दिनाक 17 6 98

डा० रामकिशोर शर्मा
रीडर हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद 211006

'ग्रन्थ के सम्बन्ध में'

मार्च की पहली तारीख, सन् १६५८ की मध्य रात्रि, मेरी नींद टूट गई और फिर नींद नही आई। इस उनींदी दशा मे अनेक विचार मेरे मस्तिष्क में मडराने लगे। देश, राजनीति, साहित्य और समाज के विषय मे अनेक मानसिक तरगे मुझे उद्विग्न करने लगी, और सोचने लगा कि मै अकिंचन अपने देश या समाज को क्या दे सकता हूँ।

मानसिक तनाव की इस स्थिति में मुझे माँ सरस्वती के आशीष का अवलम्ब मिला। मैंने सोचा कि साहित्य के द्वारा देश और समाज की सेवा करूँ।

यहीं से इस नाटक के सृजन की प्रेरणा मिली। इस भावावेश मे मैंने लेखन प्रारम्भ किया और लगभग एक माह मे यह नाटक "अब तो नींद खुले" और दो काव्य-सग्रह पूरे किये। सयोगवश ये ग्रथ अप्रकाशित रह गए और समय के इस अन्तराल ने मुझे और कुछ सोचने का मौका दिया। इस अवधि में नाटक के मूल रूप मे सशोधन और परिवर्द्धन करके इसे अभिनय योग्य बनाने का प्रयास किया गया है।

नाटक का कथ्य

भारत देश महान् रहा है, और महान् है। इसकी मर्यादा और भावभूमि शाश्वत और सनातन है। इस महाउदधि मे अनेक सस्कृतियाँ आई और समाहित हो गई।

राजनीतिक उथल-पुथल, विदेशी आक्रमण और सत्ता ने हमे हमेशा बिखेरने और हम पर हावी होने का प्रयास किया है किन्तु हमारी सगठित शक्ति के आगे सदा झुकना पड़ा है। आक्रामको और अत्याचारियो के आधिपत्य को इस देश ने सहज ही उतार फेंका है। फिर भी जो व्यक्ति या समाज इस देश की भावधारा में डूबा वह इसका हो गया।

पिछली तीन शताब्दियो मे हम अंग्रेजी इन्द्रजाल मे बँधे रहे। लार्ड डलहौजी के आगमन के बाद अंग्रेजी शिकजा और प्रगाढ़ हो गया। धीरे-धीरे अनेक छोटे-बडे राज्य अंग्रेजी शासन मे मिला लिए गए। नागरिको, नवाबो, राजाओं और मुगल बादशाहो के अधिकार छीन लिए गए और उन्हे अंग्रेजों ने अनेक यन्त्रणाए दी। संकट की इस घडी मे हमारी राष्ट्रीय चेतना जाग्रत हुई और इस कसमसाहट ने सन अठारह सौ सत्तावन मे प्रथम स्वतत्रता सग्राम का रूप धारण किया। इस सग्राम के धक्के से अंग्रेजी साम्राज्य की नीव हिल गई, किन्तु दुर्भाग्यवश स्वतन्त्रता के द्वार पर पहुँचते पहुँचते हम पराभूत हुए। इस पराभव का कारण अंग्रेजों की शक्ति नहीं हमारी आपसी फूट थी। कुछ स्वार्थी तत्त्व और गद्दार अपनी अहपूर्ति के लिए देश को बंधक रखने मे भी नही हिचकते।

किन्तु अठारह सौ सत्तावन के बाद स्वतत्रता की शिखा बुझी नही। अग्नि के स्फुलिंग ने अणु का रूप धारण कर लिया देश में एक विचार क्रांति हुई हिन्दू, मुसलमान

सिख, भारत की सम्पूर्ण प्राणशक्ति स्वतन्त्रता के लिए व्यग्र हो उठी और इस प्राण शक्ति को गाँधी सदृश महान आत्माओं का नेतृत्व मिला। सुभाष चद्र बोस, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, बाल गगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, जवाहर लाल नेहरू, डा० भीमराव अम्बेदकर एव देश के अन्य अगणित शूर सेनानियो ने स्वतन्त्रता की राह मे केशरिया बाना पहना। नेताजी सुभाष चन्द्र ने "आजाद हिन्द फौज" की स्थापना की और जयहिन्द का नारा दिया। महात्मा गाँधी और पडित जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व मे असहयोग आन्दोलन हुआ। इस समन्वित हुंकार से अंग्रेजी शासन चरमराने लगा और अन्तत उन्हे भारत छोडना पडा। सत्ता हमे पुन वापस मिली।

किन्तु दुख है कि अँग्रेजो द्वारा बोया गया फूट का बीज सन् उन्नीस सौ सैतालीस तक विस्तृत हो चुका था और उसकी शाखाओं ने स्थान घेर लिया था। परिणामत हमे अपने देश को दो भागो मे बॉटना पडा। एक भारत दूसरा पाकिस्तान। एक ही मॉ के दो पुत्र परस्पर इतने विरोधी हो गए कि वे महायुद्ध पर उतारू हो गए। हमारे सम्मुख भारत-पाक युद्ध की विभीषिकाएँ आ चुकी है। अपनी-अपनी सुरक्षा के लिए शस्त्र की होड अब भी जारी है और इसका लाभ व्यापारी राष्ट्र ले रहे है। यदि हम दोनो एक होते तो हमारा देश, कितना विशाल और महान् होता। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी हमारी वेहोशी, हमारी निद्रा नही समाप्त हुई। ज्योति और एकता का प्रतीक महात्मा गॉधी इस अधकार और उन्माद का निशाना बना। हिन्दू, मुसलमान, सिख विश्व के समस्त प्राणी एक ही ईश्वर की सन्तान है।

ईशावास्यमिद सर्व यत्किंचित् जगत्यां जगत तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा· मा गृध· कस्यस्वित् धनम्।

ईश्वर की विराटता मे जब हम विश्वास नही करते और ईर्ष्या या शत्रुतावश जब ईश्वर प्रदत्त दूसरो के अधिकारो का हरण अपनी अहतुष्टि के लिए करने लगते हैं तब कलह विघटन और सम्प्रदाय का उदय होता है।

कलह, विघटन औग सम्प्रदाय की इस अग्नि मे कितनी महान् आत्माएँ हुताहुत हुई, हम नही कह सकते। स्वार्थ और सम्प्रदाय का यह भूत हमारी सगठित शक्ति को सदा बिखेरता रहा, हमे दुर्बल और अशक्त बनाता रहा, हमारी स्वतन्त्रता को छीनता रहा किन्तु हम अब भी नही जाग सके। "अब तो नीद खुले" नाटक का काल सन् १८४८ से १९४८ का समयचक्र है। अग्रेजी परतन्त्रता से स्वतन्त्रता प्राप्ति ही इसका मुख्य कथ्य है। शताब्दी की इस बडी अवधि में कोई एक मुख्य नायक नहीं हो सकता था अत घटना क्रम को समन्वित रखने के लिए भारत-मॉ के रूप मे एक नारी, चिन्तक और द्रष्टा के रूप मे एक साधु का चरित्र रखा गया है, जो सम्पूर्ण घटनाक्रम को जोड़ता है।

पाच अको मे विभक्त इस नाटक मे एक शताब्दी की मुख्य घटनाओं को चित्रित करने का प्रयास किया गया है ऐतिहासिक घटनाओं एव मुख्य पात्रों के कथोपकथन भी

सम्बन्धित पात्रो के अनुकूल रखने का प्रयत्न किया गया है। पचम अक मे गॉधी जी के भाषण के बहुत कुछ अश, विभिन्न अवसरों पर उनके द्वारा दिए गए भाषणो मे से उद्धृत किए गये है।

इन कथोपकथनों द्वारा किसी वर्ग, समुदाय, शहीद या नेता के प्रति कोई दुर्भावना नही व्यक्त की गई है। भारतीय जनमानस को स्नेह सौहार्द एव राष्ट्रीय चेतना की ओर उन्मुख करने का यह लघु प्रयास है। आशा है सुधी पाठको का आशीष मुझे प्राप्त हो सकेगा।

मै डा० जगदीश गुप्त एव डा० रामकिशोर शर्मा के प्रति आभारी हूँ, जिन्होने अपनी सम्मति से मुझे प्रोत्साहित किया है।

राजाराम शुक्ल
२१४/१८०ए/४ए, नागवासुकि
दारागज इलाहाबाद।

१५ ६ ६८

“अब तो नींद खुले”

भारतीय स्वतंत्रता सग्राम पर आधारित नाटक”

(काल सन् १८४८ से १६४८)

पात्र परिचय

प्रथम अक–[लार्ड डलहौजी की अपहरण नीति (भूमिका)]

प्रथम दृश्य

पात्र–(1) चार, पॉच नागरिक–हिंदु, मुसलमान एव सिख

(2) एक नारी पात्र–भारत मॉ की भूमिका मे।

दृश्य दो

(i) एक बालिका आयु ७ वर्ष

(ii) एक मॉ नारी पात्र

(iii) एक वृद्ध साधु

(iv) एक तरुण

(v) नाना साहब धू-धू पन्त

(vi) रानी लक्ष्मीबाई–झॉसी की रानी।

दृश्य तीन

(i) लार्ड डलहौजी

(ii) अग्रेज सेनापति लारेस, कर्नल स्लीमैन, कर्नल लैम्बर्ट, कर्नल आउटरम

(iii) लेडी सुसान हे “लार्ड डलहौजी की पत्नी”

दृश्य चार

(i) लार्ड डलहौजी

(ii) लेडी सुसान हे

(iii) एक अर्दली

(iv) क्लबघर मे कुछ अग्रेज एग्लो इडियन एव एक भारतीय नारी

अक द्वितीय (अपहरण नीति का विस्तार एव देशी असतोष)

प्रथम दृश्य

लाहौर की रानी झिन्दन

(ii) वजीर लाल सिंह एव अन्य दो तीन सरदार

(iii) सेनापति लारेंस–लाहौर का रेजीडेन्ट

दृश्य दो

(i) अग्रेज सेनापति लारेंस

(ii) कुछ अग्रेज अधिकारी

दृश्य तीन

(i) मुल्तान का राजा मूलराज

(ii) कुछ दरबारी

(iii) एक अर्दली

(iv) अंग्रेजी दूत

दृश्य चार

(i) लारेंस

(ii) कुछ दरबारी

(iii) एक दूत

दृश्य पाच

(i) दो नवयुवक, उदय एवं विजय

(ii) तीन अग्रेज अश्वारोही

दृश्य छह

(i) लारेंस एव दरबारी

(ii) सरदार खान सिह

दृश्य सात

(i) एक गायक

(ii) सेनापति शेरसिह

(iii) सरदार दिलेर खॉ

(iv) मूलराज मुल्तान का राजा

(v) कुछ सैनिक

दृश्य आठ

() रेजीडेंट लारेंस

(ii) अंग्रेज अधिकारी ह्यूगफ एवं अन्य अग्रेज

(iii) एक दूत

दृश्य नौ

(i) नबाव वाजिद अलीशाह लखनऊ का नवाब

(ii) कुछ दरबारी

(iii) एक नर्तकी

(iv) एक भॉड (विदूषक)

(v) कर्नल आउटरम

(vi) हजरतमहल नवाब की बेगम

(vii) कुछ दासियॉ

(viii) अग्रेज सैनिक

दृश्य दस

(i) लार्ड डलहौजी

(ii) अग्रेज सेनापति लैम्बर्ट

दृश्य ग्यारह

(i) वर्मा का राजा एव उसके मन्त्री

(ii) एक अर्दली

(iii) एक अग्रेज दूत

दृश्य बारह

(i) लैम्बर्ट

(ii) कुछ अंग्रेज अधिकारी

(iii) तीन, चार सैनिक

अक तृतीय (1857 का स्वतत्रता सग्राम एव पराभव)

(i) नाना साहब

(ii) रगोबापू

(iii) अजीमुल्ला खॉ।

दृश्य दो

(i) नाना साहब

(ii) वहादुरशाह जफर (अतिम मुगल सम्राट)

(iii) जीनत महल, साम्राज्ञी

(iv) अजीमुल्ला खॉ

(v) वहादुरशाह का पुत्र

दृश्य तीन

(i) नवाव वाजिदअली शाह अवध का निर्वासित नवाव

(ii) बेगम हजरत महल

(iii) नाना साहव

(iv) अजीमुल्ला खॉ

(v) अलीनकी खॉ एव अन्य दरवारी

दृश्य चार

(i) लक्ष्मीबाई झॉसी की रानी

(ii) कचुकी

(iii) एक साधु

(iv) कुछ दरवारी एव नागरिक

दृश्य पाच

(i) मगल पाण्डे क्रातिकारी सैनिक

दृश्य छह

(i) अग्रेज सार्जेन्ट ह्यूसन

(ii) कुछ भारतीय एव अंग्रेज सिपाही

(iii) मगल पाण्डेय

दृश्य सात

(i) एक सैनिक

(ii) तीन नागरिक

दृश्य आठ

(i) चार नागरिक

(ii) तीन सैनिक

दृश्य नौ

(i) तीन, चार नागरिक

दृश्य दस

(i) लार्ड कैनिंग

(ii) सेनापति लारेंस

(iii) कुछ अंग्रेज अधिकारी

(iv) अंग्रेज और भारतीय सैनिक

दृश्य ग्यारह

(i) झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई

(ii) दरबारीगण

दृश्य बारह [क्रांति की असफलता]

(i) एकवाचक

(ii) मातमी धुन

अंक चतुर्थ (भावी क्रांति का सन्देश एवं आशीष)

दृश्य एक

(i) एक साधु

(ii) एक नारी, प्रथम अंक प्रथम दृश्य की नारी पात्र

(iii) साधु के कुछ शिष्य

दृश्य दो

(i) अध्यापक

(ii) गाँधी जी की भूमिका मे एक छात्र एव अन्य बच्चे

(iii) डिप्टी साहब

दृश्य तीन

(i) दो नागरिक

(ii) सुरेन्द्र नाथ बनर्जी

दृश्य चार

(i) सुरेन्द्र नाथ बनर्जी

(ii) कुछ प्रतिनिधि

(iii) कुछ नागरिक

दृश्य पाच

(i) लार्ड डफरिन

(ii) मिस्टर ह्यूम

दृश्य छह

(i) अग्रेज गवर्नर जनरल

(ii) अग्रेज अधिकारी थियोडार

दृश्य सात

(i) सर सैय्यद अहमद खॉ

(ii) नवाब सलीमुल्ला खॉ

(iii) कुछ अन्य मुसलमान

दृश्य आठ

(i) एक विद्यार्थी नेता

(ii) विद्यार्थियो का समूह

दृश्य नौ

(i) बाल गगाधर तिलक

(ii) गोपाल कृष्ण गोखले

(iii) कुछ अन्य प्रतिनिधि

दृश्य दस

(i) गॉधी जी, नेहरू जी

(ii) कुछ प्रतिनिधि

(iii) कुछ नागरिक

दृश्य ग्यारह

(i) गॉधी जी

(ii) जज ब्रूमफील्ड

(iii) सरकारी वकील

(iv) पुलिस एव चपरासी

दृश्य बारह

(i) गॉधीजी

(ii) जेलर

(iii) डा० भीमराव अम्बेदकर

दृश्य तेरह

(i) दो नागरिक

दृश्य चौदह

(i) नेताजी सुभाष चन्द बोस

दृश्य पन्द्रह

(i) लार्ड लिलिन्थ गो

(ii) कुछ अंग्रेज अधिकारी

दृश्य सोलह

(i) नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

(ii) परेड पर आजाद हिंद फौज के सैनिक

दृश्य सत्रह

(i) दो नागरिक

अंक पंचम

दृश्य एक

(i) पन्द्रह अगस्त १९४७ उल्लासपूर्ण वातावरण
प्रभात फेरी आदि

दृश्य दो

(i) पंडित जवाहर लाल नेहरू प्रथम प्रधानमंत्री
(राष्ट्र को संबोधन)

(ii) विशाल सभा

दृश्य तीन - (बिडला मंदिर में उपदेश एवं गाँधी की हत्या)

(i) गाँधी जी

(ii) श्रोतागण

दृश्य चार

(i) चाय की दूकान पर कुछ लोग

(ii) रेडियो पर राष्ट्रीय शोक का प्रसारण
जवाहर लाल नेहरू द्वारा

दृश्य पाच

(i) दो नागरिक मित्र

(ii) रेडियो पर राष्ट्रीय गीत

(समाप्त)

प्रथम अंक (प्रथम दृश्य)

(आवादी मे दूर एक वन-प्रदेश। समय सायकाल का धुधलका धूल एव झझावात का वातावरण वन, प्रान्तर मे चार-पाच लोग एकत्रित है, इनमे हिन्दू-मुसलमान एव सिख है वेशभूषा से इनकी पहचान स्पष्ट है, परस्पर गम्भीर विचार-विमर्श की मुद्रा)

एक व्यक्ति–देखो इस ऑधी की तरह आजकल रोज ही कहो न कही अन्धड और तूफान आता रहता है। हमारे जीवन मे भी तो इसी तरह का तूफान है। हम अपने देश मे रहकर भी अपने अधिकारो से वचित है। आज का शासन रोज ही हमारे विरुद्ध एक कुचक्र रच रहा है।

दूसरा–हॉ यह तो सच है। जव से लार्ड डलहौजी आया है, किसी न किसी वहाने वह हमारे देश पर अपना शिकजा कसता जा रहा है।

तीसरा–हमें इस समस्या पर गहराई से सोचना है, और आगे कदम बढ़ाना है।

पहला व्यक्ति–इसीलिए तो हम यहा एकत्रित हुए है–(सहसा दूर वन-प्रान्तर मे एक स्त्री के सिसकने का स्वर सुनाई पड़ता है। सभी उसे ध्यान से सुनते है)

पहला व्यक्ति (दूसरे के कन्धे पर हॉथ रखते हुए एक ओर इगित करके कहता है) देखो उधर जगल से किसी नारी के सिसकने की आवाज आ रही है।

दूसरा–हॉ लगता है कोई दुःख की मारी है कहॉ जायगी इस स्थान मे सायकाल मे, ॲधेरा वढ़ता जा रहा है।

तीसरा–चलो देखे, कौन है।

चौथा–अवश्य चलना चाहिए।

(सभी का उस ओर प्रस्थान जहा से नारी के सिसकने का स्वर आ रहा है। वन प्रान्तर में एक प्रौढ़ा, तेजस्विनी, सुन्दरी एव सुशील नारी के दर्शन होते है। नारी का स्वरूप एव वेशभूषा अत्यन्त शालीन है। चेहरे पर उदासी एव गालो पर ऑसू की दो धाराओं के चिन्ह स्पष्ट है। उनके पास पहुच कर सभी अवाक् रह जाते है। एक व्यक्ति साहस बटोरकर पूॅछता है)

पहला व्यक्ति– मा तुम कौन हो?

नारी–(अपना मुख उन लोगो की ओर करके) मॉ कहकर तुम पूॅछते हो कौन हो?

पहला व्यक्ति–नही नही मै, मै जानना चाहता हूॅ तुम किसकी मॉ हो तुम्हारा घर कहा है और तुम्हारी यह दशा क्यो हुई?

नारी–मै, मै तुम्हारी मॉ हूॅ।

पहला व्यक्ति–लेकिन-लेकिन मैं तुम्हें नही

नारी–इसीलिए तो मै रो रही है।

पहला–मा तुम्हारी बाते बहुत रहस्यपूर्ण है, मै नही समझ पा रहा हूँ।

नारी–मेरी बाते जिस दिन तुम समझ जाओगे मेरा रोना बन्द हो जायेगा और तुम्हारा भाग्य पलट जाएगा।

पहला–माँ साफ बताओ तुम क्या कहना चाहती हो और क्यों रो रही हो।

नारी–तुम नही जानते मैं क्या थी, और क्या हो गई।

सभी–(उत्सुकतापूर्वक आदर के साथ) नही माँ हम कुछ नही जानते

नारी–जानना चाहते हो?

सभी–हाँ मा, शीघ्र बताओ हमारी उत्सुकता बढ़ती जा रही है।

नारी–तो देखो (सहसा नारी का रूप बदल जाता है एक देदीप्यमान सुन्दरी देवी का रूप दिखाई पड़ता है अखंड भारत का चित्र दिखाई पडता है मन्द स्वर में इस श्लोक का स्वर प्रस्फुटित होता है) "ईशावास्यमिद सर्वं यद्किंचित् जगत्या जगत तेन त्यक्तेन भुजीथा मा गृध्र कस्यस्वित् धनम्।।

(सभी लोगो के सिर मां के चरणो मे नत हो जाते है। धीरे-धीरे श्लोक का स्वर मन्द होकर रुक जाता है फिर नारी का वही रूप दृष्टिगोचर होता है।)

सभी–(एक साथ) मा-मा-मा

नारी–हाँ, मे तुम्हारी माँ हूँ। मेरा वह रूप अब नही रह गया, कितने शासक कितनी सस्कृतियाँ यहाँ आई। मैने सबको अपने आँचल की स्नेह छाया दी किसने कब पहचाना। जो यहाँ है वह भी बिखरे पडे है।

सब – मा हम लोग क्या ... ..

नारी–तुम लोग जब तक आँख नही खोलते एक साथ सगठित नही होते, अपने को नही पहचानते. इसी तरह लुटते रहोगे। तुम्हारी अतुलशक्ति नष्ट होती रहेगी। और आज मेरे लिए सबसे बडा दु ख यही है।

सभी (मुग्ध होकर सुनते है) धीरे-धीरे अधकार बढ़ता जाता है)

माँ का स्वरूप नही दिखाई देता केवल पांच-छह लोग रह जाते है।

सभी लोग (परस्पर)–यह माँ का सन्देश है हमें अपने लक्ष्य के लिए सगठित होना चाहिए

पटाक्षेप प्रथम दृश्य समाप्त।

दूसरा दृश्य

[समुद्र मे ज्वार ''भूमि पर झझावत'' एक जगल के किनारे कुछ लोग। इधर-उधर टूटे वृक्षो की शाखाए और टहनिया पड़ी है। जन समूह, कोलाहल एक बालिका और मा, कुछ और लोग दिखाई पड़ने है। आंधी समाप्त हो जाती है।]

वालिका–(मा से पूछती है) मॉ इनती वड़ी ऑधी क्यो आती हे। तुम तो कहती हो भगवान् बडे दयालु हैं पर हमे ऑधी में डालने से उन्हे क्या मिलता है।

मॉं–हमारे लिए तो रोज ही ऑधी आती है बेटी

एक तरुण–ऐसी आधी तो मैने अभी तक नही देखी थी।

एक वृद्ध साधु का प्रवेश–हा बेटा यह तो ठीक है। यह तो भगवान् की ऑधी है। आजकल तो गोरे साहबो के कारण, कही न कही रोज ही ऑधी आती है। इस तरह शाखा की भॉति बडे-वडे राजा, महराजा भी अपने बच्चो तथा धन से अलग कर दिए गए है।

तरुण–इसका नतीजा क्या होगा वावा।

वृद्ध–नतीजा, नतीजा पूँछने को है। जब तक तुम्हारे ऐसे जवान सग्राम मे नही कूद पडेगे वे वृक्षो की शाखाओं की भॉति पडे-पडे सूख जाएगे।

तरुण–तो बाबा कोई मार्ग?

वृद्ध–मार्ग भी ढूँढ़ने की वस्तु है। हिमालय से निस्सृत जलधार जिधर ही चल पडे मार्ग वन जाता है, उसकी जीवनमय धारा मरुभूमि मे भी जाय तो उपवन बन जाता है। (इतने मे ही दो अश्वारोही वहॉ पर आ जाते है एक विधुल्लता की भॉति कान्तिमयी तरुणी है दूसरा तेजस्वी पुरुष। ये वृद्ध की वात सुन लेते है, जिज्ञासा पूर्वक उनके पास जाकर पूँछते है]

पुरुष–वावा, क्या हम भी आपकी शिक्षाओं का लाभ उठा सकते है।

वावा–हॉ, हॉ क्यो नही परन्तु पहले यह बताओ कि तुम हो कौन?

पुरुष–लोग मुझे नाना साहब धूधू–पत कहते है।

वावा – और यह वेटी !

पुरुष – यह वही अभागिनी देवी है जिसे पुत्रहीन समझकर अग्रेज दमन करने का प्रयत्न कर रहे है।

वृद्ध साधु–(अपना वरदहस्त उठाते हुए) सौम्य तुम्हारे अन्दर का अंशी जाग उठा है। साक्षात् दुर्गा तुम्हारे साथ है। तुम्हारी शक्ति अजेय है। यदि तुम्हारे बन्धुओं ने विश्वासघात न किया तो जयश्री तुम्हारा वरण करेगी और यदि किया तो भी तुम्हारी कीर्ति अमर हो जायेगी जागो और माता को प्राणो की भेट देकर प्रफुल्लित करो

(हॉं एक बार ऑख मूँद कर बोलो भारत माता की जय, सब वैसा ही करते है। ऑख खोलने पर वृद्ध दृष्टिगोचर नही होते। फिर नाना साहब ने कहा]

नाना साहब–लक्ष्मी, अवश्य ही यह वृद्ध कोई देवदूत था. इनके अमृतोपम उपदेश हमे रोमाचित कर देते है। हमे तन-मन धन से इनके उपदेशो का पालन करना चाहिए।

लक्ष्मी–यदि माता की गोद मे अतिम श्वास तक लडते लडते अपने प्राण त्याग दू तो परमभाग्यवती हूँगी।

नाना साहब – (तरुण से) और बन्धु तुम दोगे हमारा साथ, हमारे स्वतत्रता सग्राम मे।

तरुण–यद्यपि मै अत्यन्त दीन हूँ परन्तु संसार को दिखा दूँगा कि एक दीन कोटिश सम्पन्नो से सुन्दर होता है।

नाना साहब–भद्र, तुम्हारा जीवन धन्य है। दीनो का हृदय दुर्बल नही होता, दुर्बल तो होते हैं वे मदान्ध जो नश्वर माया पाश मे पडकर एक को दो समझने लगते है। तो हम सभी आत्मोसर्ग के लिए तैयार है न?

सभी – पूर्णत।

नाना साहब–तो आओ आज हम भारत मां की चरण-रज लेकर शपथ ले कि जब तक हमारा शरीर मॉ की चरण रज मे मिल नही जाता हम शिर नही झुकाएगे।

[सभी धूलि लेकर शपथ लेते है।]

पटाक्षेप

(द्वितीय दृश्य समाप्त)

[दृश्य तृतीय]

[लार्ड डलहौजी का दरबार–एक सुन्दर प्रासाद-कोष्ठ मे डलहौजी, सेनापति लारेंस, कर्नल स्लीमैन और कर्नल आउटरम आदि आसीन हे वातायन से पेड़ो की झुरमुट दिखाई देती है। ठडी हवा चल रही है]

डलहौजी–[गभीरता से] हमे अपने मार्ग को निश्चित कर लेना चाहिए। मै चाहता हूँ कि मेरा नाम इंग्लैड की राज्य परिधि बढ़ाने वालो में से एक हो। 'इन्डियन' ठीक उस पेड की छाया की तरह से है उनके दिल मे भी इसी प्रकार की ठडी हवा चलती है। उनमे जोश नही है, वे हमारे आगे सर नही उठा सकते। उनकी शाखाओं को तोड डालो। उनके फूलो को अपनी शय्या पर डालकर कुचल दो। उनके अन्दर एक कराह उठेगी लेकिन वे हमारा कुछ नही कर सकते।

लारेंस–गुस्ताखी माफ हो सर। इन्डियन शान्त जरूर है लेकिन बुजदिल नही

डल–लेकिन हमे उसे वुजदिल वनाना है। वह वीक है उसे कुचलने में हमे तनिक भी हिचक न होनी चाहिए।

लारेंस–सर यीशु की नसीहत है कि कमजोर के साथ रहम करो।

डल०–मगर हम अव सौदागर नही हम तो ब्रिटिश शासन के प्रतिनिधि है। सल्तनत की बागडोर सख्ती से चलती है। छल-बल, कर मे हुकूमत करना ही शहशाहत है

लारेंस–रोज यू प्लीज, सर।

डलहौजी–(अन्य लोगो से) आप लोगो की क्या राय है।

सब–हुजूर का हुक्म मन्जूर है।

[लेडी हलहौजी का प्रवेश]

लेडी – हल्लो लार्ड डार्लिंग हमे भी मजूर है]

डलहौजी–(लेडी को चूमते हुये प्यार से) क्या मन्जूर है।

लेडी–तुम्हारी मर्जी।

डल– आखिर सुना भी है। हमारी मर्जी क्या है।

लेडी–यही कि हम सब क्लब चलेगे शहशाहत का डॉस करेंगे मै मल्का बनूँगी।

डल०–हॉ मल्का तो वनोगी जरूर, लेकिन उसमे खून की होली होगी।

लेडी–खून की होली क्या है डार्लिंग।

डल – तुम वेडी इनोसेंट हो स्वीट हार्ट। मल्का बनने से पहले अपने सिहासन के रास्ते के झाल झखाड़ों को काटकर अलग कर देना होगा। मेरा मतलब कि छोटे-मोटे राजाओ की जागीरे को छीन लेना होगा और वक्त जरूरत उनका कत्लेआम भी करना होगा। तभी तो मिलेगी पक्की शहशाहत। तभी तो बनोगी तुम मल्का।

लेडी–न वावा न, मै ऐसी मल्का न बनूगी, दूसरो की रोटी छीनकर मै अपना पेट न भरूँगी।

डल–शेक्सपीयर ने ठीक ही कहा है फ्रेलिटी दाऊ नेम इज वीमेन। तुम मर्दों का साथ नही दे सकती 'माइ लव'

लेडी–हॉ, हॉ ऐसा करने से पहले मुझे इग्लैड भेज देना। (सिसकती हुई अन्दर चली जाती है।)

डल–आप लोग भी तो इंग्लैड नही चले जाएगे।

सब–(लारेस के अतिरिक्त) हम वीमेन तो नही है माई लार्ड। हम तो इडिया को अपना बनाने आए हैं।

डल–हमें तुम्हारी ही तरह के साथियो की जरूरत है। मेरी बातो को गौर से सुनो ओर यूनियन जैक को ऊँचा कर दो।

जनरल लारेंस तुम अधिक समझदार हो। तुम पजाब जाओ, अपनी चालाकी से उनकी बहादुरी बरखास्त कर दो। वे कमजोर हो जाएँगे और हमारा साथ देंगे। कर्नल स्लीमैन तुम अवध जाओ वहा का लोग बहुत मिली हो गया है। तुम उनका होश ठीक कर दो। किसी का कुछ भी ख्याल मत करना। तुम्हारी मदद के लिए मैं आउटरम को शीघ्र भेजूँगा। तुम दोनो खिलाडी मिलकर 'अवध' के गेम को आउट कर दो ताकि वह अपना गोल पूरा न कर सके।

आउटरम–माई लार्ड हम ताकत भर बाज नही आएँगे। हम लखनऊ की शौकत को मिट्टी मे मिला देगे।

डल–शब्बास ब्रेवो लैम्बर्ट तुम वडा इक्सपर्ट है। तुम बरम्हा जाओ और वरहम्हा की बुद्धि को चक्कर मे डाल दो।

लैम्बर्ट– योर हाइनेस अगर आप इजाजत दे दे, तो मै सूरज मे भी धब्बा निकाल सकता हूँ।

डल–इसी की जरूरत है। बर्मा का लोग वडा होशियार है। उसे वस तुम्ही फॉस सकते हो।

आउटरम–माई लार्ड हम ताकत भर बाज नही आएँगे। हम लखनऊ की शौकत को मिट्टी में मिला देगे।

लैम्बर्ट – माइ लार्ड, इडिया के जो छोटे राज्य है, उन पर भी तो कब्जा करना है।

डल–तुम उनकी चिन्ता न करो। जब इडिया के ये तीनो टॉके नथ जाएँगे, तब ये छोटी-छोटी रियासते खुद हमारे कब्जे मे आ जाएगी। इनके लिए तुम परेशान न हो। यह काम तो हमारा एक फरमान बड़ी आसानी से कर लेगा। अब आप लोग जा सकते है।

(सभी सैल्यूट करके जाते है दृश्य तृतीय समाप्त)

(दृश्य चतुर्थ)

(डलहौजी का केलिगृह। ऐश आराम की सम्पूर्ण सामग्रियॉ, अग्रेजी साज-सज्जा। लेडी डलहौजी एक आराम कुर्सी पर अक में मुख किए बैठी है, डलहौजी का प्रवेश।)

डल–हल्लो डार्लिंग क्या बात है, कहीं इग्लैड जाने की तैयारी मे तो नहीं हो।

बेगम (रूठे हुए स्वर में) हॉ खून से होली खेलने के पहिले मै इग्लैड चली जाना अच्छा समझती हूँ। तुम्हारा रास्ता अलग, मेरा रास्ता अलग।

डल--'सुसान' तू कितनी भोली है, बस थोडी सी बात पर मचल गई। (चूमता है)

सुसान हे--(हांथ छुड़ाते हुए) चलो-चलो तुम तो मुझ जैसी कितनी औरतो का सुख छीन लोगे। तुम्हे मेरा भी सुख छीनने मे क्या हिचक।

डल--सुसान, क्या इसीलिए तुमने चर्च मे होली क्रास के सामने साथ रहने की कसम खाई थी?

लेडी-- माई लव मुझ प्यार की याद मत दिलाओ। वह तो इग्लैड मे रहकर भी ताजी रहेगी।

डल--तुम नही समझती माई लव। मेरी तमन्ना है कि तुम मेरे सुख मे साथी बनो।

दुनिया मे चले जाने के बाद कौन देखता है कि अपने किए का हमे क्या फल मिलता है। डार्लिंग ' ईट ड्रिंक, ऐंड बी मेरी।''

देख रही हो यह लाल मदिरा (एक अगूरी मदिरा) आओ दोनों को एक में मिलाकर हम भी मिल जाएँ, जो इनका रग हो उसमें हम भी रंग जाएँ।

(दोनो शराब मिलाकर पीते है। शराब का हल्का नशा हो जाता है पेग पर पेग खाली हो गई। नशा और बढ़ गया। डलहौजी एक कुर्सी खींचकर सुसान के सामने बैठ गया और शराबी स्वर मे बोला।)

डल--सुसान, मल्का बनोगी।

सुसान--मै किस मल्का से कम हूँ।

डल--मल्का, तुम्हारी मेड किधर है।

सुसान--तुम्हारा ब्वाय किधर है।

डल--अरे ओ चाइल्ड चैम्बर लेन।

(एक नौकर का प्रवेश--झुक कर सलाम करता है।)

डल०--मेरी गाडी तैयार करो। हम आज दरबार करेगा।

(सुसान और डलहौजी एक दूसरे के गले मे हॉथ डाले बाहर जाते है। बाहर बग्घी तैयार है।)

(बग्घी पर बैठते है। बग्घी चलने की आवाज)

(एक क्लब घर का दृश्य) डलहौजी प्रवेश करता है। सभी लोग उसका अभिवादन करते है।)

डल--आज हम बहुत खुश है। आज हम अपने दरबार मे सबको खुश कर देगा। हम सबको इनाम भी देगा। हम आज इन्डियन डॉस देखेगा।

यहॉ पर तो सब अपने भाई है। पर यहॉ पर कुछ काला साहब भी है। ये लोग बहुत अच्छा होता है। (एक ऐंग्लो इडियन से) हॉ तुम बहुत अच्छा है। आज हम तुमको बहुत इनाम देगा। तुम हम लोगो का डॉस सीख गया।

ऐंग्लो इडियन–नो सर

डल०–तो कोई बात नही। आज तो हम तुम्हारा ही डॉस देखेगा। तुम्हारा ही गाना सुनेगा।

इडियन– सर मेरे को नाचना नही आता।

डल–तो क्या, हम तो तुम्हारा ही नाच देखेगा। तुम्हे नाचना ही पडेगा।

(इडियन नाचने का अभिनय करता है किन्तु नाच नहीं पाता।)

डल–तुम सचमुच बडा बोगस है। तुम्हारी लेडी किधर है, आज हम इडियन लेडी का डॉस देखेगा।

(एक सुन्दरी युवती लाई जाती है। वह नाचना प्रारम्भ कर देती है। उसके नृत्य से प्रभावित होकर लेडी डलहौजी चचल हो जाती है और उठकर डॉस प्रारम्भ कर देती है। (डलहौजी भी सुसान के साथ नृत्य करने लगता है।)

(पटाक्षेप)

(दृश्य चार अक प्रथम समाप्त)

अंक द्वितीय (दृश्य प्रथम)

(लाहौर का दरबार–रानी झिन्दन वजीर लाल सिह तथा अन्य सरदार यथा योग्य आसीन है)

एक दूत का प्रवेश–महारानी की जय हो, अग्रेजी रेजीडेन्ट लारेंस साहब बहादुर तशरीफ ला रहे है।

लारेस का प्रवेश–महारानी को सलाम।

रानी साहिबा–हिज मैजिस्टी गवर्नर जनुरल का फरमान है कि वजीर लाल सिह को बरखास्त कर दिया जाय (एक बन्द लिफाफा देता है)

रानी झिन्दन–(आश्चर्य एवं आक्रोश से) क्यों?

लारेस–लाल सिह मनमानी करता है। हिज मेजिस्टी का अनादर करता है।

रानी–शासन का काम मन लगाकर करना मनमानी नहीं है

लारेस–लेकिन अब तो आपको हिज मैजिस्टी की राय लेनी ही पड़ेगी आपके राज्य म बडी गड़बड़ी आ गई है।

रानी–हम अपनी गडबडी अपने आप दूर करेगे। हमे किसी दूसरे के अकल की जरूरत नही।

लारेस–परन्तु हम अब ऐसा नही होने देगे। हिज मैजिस्टी के खिलाफ चलने वालो को हम रहने नही देगे। लाल सिह हमारे खिलाफ लोगो को भडकाता है। इस वजह स पूरे राज्य मे गड़बडी पैदा हो गयी है।

कुछ सिख–हॉ यह ठीक है, लाल सिह किसी का कुछ कहा नही मानता, हम लोगो की भी राय नही लेता, इसी वजह से गडबडी पैदा हो गई है।

लारेस–तो आप लोग भी हमारे साथ है। हम लाल सिह को 'डिसमिस' कर देना चाहता है और उसकी जगह आप लोगो की राय से राज्य का इतजाम करना चाहता है।

कुछ सरदार–हम भी यही चाहते है।

लारेस–तो आप जितने लोग ऐसा चाहते है अपनी राय दे (एक दो को छोडकरर सभी ने हॉथ उठाकर राय दी)

लाल सिह–काश, इस समय महाराण रणजीत सिह होते, सिक्ख भाइयो तुम अपने सगठन की हँसी उड़ा रहे हो। यह अंग्रेजी जादू तुम्हे बेहोश बना देगा। एक दिन तुम अपनी भूल पर पछताओगे, और तुम्हें इस जाल से निकलने का रास्ता भी नजर न आएगा।

(कुछ को छोडकर सभी सरदार एक साथ बोल उठते है, हम तुमसे तालीम नही, इस्तीफा चाहते है। तुम हमारी वजारत के काबिल नही। हम तुम्हारी गुलामी नही कर सकते। तुम इस्तीफा दो।

इस्तीफा दो (दरबार कोलाहल पूर्ण हो जाता है।)

लारेस–वजीर लाल सिह तुम अपने भाइयो के वफादार नही हो। तुम वजारत के काबिल नही हो, हम तुम्हे बरखास्त करता है।

कुछ सरदार (एक साथ) ठीक है, ठीक है यह बरखास्त कर दिया जाय।

(शोर बढ़ जाता है। लाल सिह अपने स्थान से उठकर अवनतमुख दुख पूर्वक दरबार से निकल जाता है। रानी झिन्दन दुखी है।

(परदा गिरता है) दृश्य प्रथम समाप्त।

(दृश्य द्वितीय)

[लारेस अपने निवास स्थान पर कुछ अनुचरो के साथ, गुप्त मन्त्रणा सी हो रही है। द्वार पर सशस्त्र पहरा है।]

लारेंस–देखा आप लोगो ने दरबार का सीन। सच मे इन्डियन बडे भोले है। उनके घावो पर थोडा मुलम्मा कर दो फिर देखो रंग ही बदल देंगे। अगर जरा सी अकल से काम लो तो ये सब अंग्रेज बन सकते है। अपने भाइयों को भूल सकते है। यहॉ हिन्दू मुसलमान दो फिरके हैं, दोनो एक दूसरे से मीलो दूर, तुम इनके बीच की खाई को और गहरी बना दो फिर तुम्हारी किश्ती के लिए कोई रुकावट नही। तुम्हारी तिजारत का रास्ता साफ हो जाएगा।

एक–सच है। हमे इनकी कमजोरी का पूरा फायदा उठाना चाहिए।

लारेंस–लेकिन हमे दोनो का बना रहना है। किसी को न मालूम हो कि अंग्रेजो ने इनके अन्दर फूट डाला है। तुम लोग खुफिया तौर से इनमे दुश्मनी पैदा करो। और शासन का क्षेत्र मेरे जिम्मे। पजाब तो अपना हो ही गया है। परन्तु अभी मुल्तान का राज्य बाकी है। अच्छा अब तुम लोग जा सकते हो किन्तु अपना काम मुस्तैदी से करना।

(पट परिवर्तन)

(दृश्य–लाहौर का दरबार लारेंस दरबार मे अपने साथियो के साथ बैठा है। किसी गभीर विषय पर विचार-विमर्श हो रहा है।)

लारेंस–आपने जो वफादारी हमारे साथ दिखाई उससे हम बहुत खुश है। लाल सिह के हट जाने से लाहौर के दरबार की तरक्की हुई। अब हम आपकी मदद से पंजाब मे अमन चैन से राज कर सकेगा। मगर पजाब मे अमन-चैन कायम करने के लिए अभी हमे मुल्तान को अपने काबू मे करना है। पजाब मे मुल्तान को मिला लेने से हमें बाहरी खतरो का खौफ न रहेगा और पंजाब की आमदनी बढ़ जायगी। अभी मुल्तान का राजा मूलराज हाल ही मे गद्दी पर बैठा है। इस मौके से हम काफी फायदा उठा सकते है।

एक दरबारी–हुजूर हमारी गुजारिश है कि हमे मुल्तान पर जल्दी ही चढ़ाई कर देनी चाहिए।

लारेंस–(सोचकर) हम तुम्हारी बहादुरी की दाद देता है। मगर पडोसी मुल्को से बेवजह लडाई करना हमारे वसूल के खिलाफ है। मुल्तान एक छोटा राज्य है। वहॉ का राजा मूलराज इतना बहादुर नही कि हमसे जग कर सके। इसलिए लडाई मे हम अपना पैसा फेंकना ठीक नही समझते। काम ऐसा करो कि सॉप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे। मूलराज अभी गद्दी पर बैठा है, इसलिए हमे यह मुनासिब है कि हम उससे कम से कम एक करोड रुपए की मॉग करे। अगर उसने रूपया दे दिया तो ठीक है नही तो हम उससे लडाई करेगे।

कुछ दरबारी–हुजूर ठीक कह रहे है।

दूसरा–सरकार बजा फरमा रहे है।

लारेंस–तो हम अपना फरमान नुमायन्दों से मूलराज के यहॉ भेजते हैं।

सब दरबारी--हाँ हुजूर ठीक है।

(दरबार स्तब्ध हो जाता है। लारेंस एक पत्र पर कुछ लिखता है और उस पर सील लगाकर एक नुमायन्दे को देता है।)

लारेंस-(नुमायन्दे को फरमान देते हुए)

फौत सिह, लो यह फरमान, मुल्तान के राजा को दे आओ। उसको हिज मैजिस्टी की ओर से बधाई भी दे देना।

फौत सिह—जो हुक्म सरकार।

(पत्र लेकर दरबार से जाता है।)

(पटाक्षेप)

(दृश्य तृतीय)

(मुल्तान का दरबार। सभी सरदार एवं दरबारी अपने आसन पर आसीन है। मूलराज अपने दरबारियो को सबोधित करते हुए)

मूलराज—अभी थोड़े ही दिन हुए मैने मुल्तान के सल्तनत की बागडोर अपने हॉथ मे ली है। मै चाहता हूँ कि आप लोग शासन के काम मे मेरी मदद करे। जमाना बडा नाजुक है। अंग्रेज यह देख रहे है कि मौका मिले तो हम छोटे राज्यों पर कब्जा कर ले। अभी ज्यादा दिन की बात नहीं अग्रेजी गवर्नर लारेंस ने पजाब के वजीर लाल सिह को बरखास्त कर दिया। अब शायद उसकी ऑखे मुल्तान की ओर लगी हों। मै अग्रेजो से झगड़ा नही चाहता मगर अपने अन्दरूनी मामलो मे उनका हस्तक्षेप पसन्द नही करता। लड़ाई मे अपने भाइयो का खून बहाना अच्छा नही, इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप अपने देश में शाति बनाए रखें। जिससे दूसरो को हमारी कमजोरी का लाभ उठाने का मौका न मिले।

एक दरबान प्रवेश करता है— महाराज की जय हो पजाब से अग्रेजी दूत आए है।

मूलराज—आने दो।

[दो दूतों का प्रवेश]

एक दूत (झुककर सलाम करते हुए)—राजा साहब बहादुर की जय हो। लाहौर के दरबार ने राजा साहब को बधाई दी है, और एक फरमान भेजा है। (एक लिफाफा मूलराज की ओर आदरपूर्वक बढ़ा देता है।)

मूलराज—(लिफाफा खोलकर पढ़ता है और गम्भीर होकर सोचने के बाद कहता है) बधाई मुझे स्वीकार है परन्तु पैतृक सम्पत्ति प्राप्त कर लेने पर कर की प्रथा मेरी समझ में नहीं आती फिर 20 लाख रुपया मैं किस प्रकार अदा कर सकता हूँ राजकोष

खाली है और इस कर को अदा करने के लिए मै अपनी प्रजा का शोषण उचित नही समझता।

दूत–मगर राजा साहब दरबार ने केवल 20 लाख ही नही मॉगा है इसके साथ आपको एक तिहाई ब्याज भी देना होगा।

मूलराज–(क्रोध से) परन्तु मै यह सब नही कर सकता, यह मेरे लिए असह्य है।

दूत–हुजूर को इसके लिए हिज मैजिस्टी गवर्नर जनरल साहब बहादुर से लड़ाई करनी पडेगी, क्या हुजूर इसके लिए तैयार है।

मूलराज–सुन रहे है आप लोग अग्रेजो की यह धमकी क्या आप लोग हमारा साथ देगे। वक्त पर अग्रेजो का मुकाबला करेगे। (सभी चुप है ,सिर नीचा कर लेते है कोई कुछ नही बोलता, मूलराज फिर अपने दरबारियो से पूँछता है)

मूलराज–आप लोग चुप क्यो है। क्या आपलोग बिल्कुल ही कायर हो गए। आप बोलते क्यो नही।

एक दरबारी–(साहस बटोर कर) महाराज हमारे पास अग्रेजों से लडने की ताकत कहॉ है। अग्रेज अब बहुत मजबूत हो गए है हम उनसे अब लड नही सकते हमे उन्हे खुश करना ही पडेगा।

(दरबार मे फुसफुसाहट बढ़ जाती है।)

मूलराज (कुछ सोचकर) अग्रेजों को धन की कामना नही है, वे इसी बहाने हमारा राज्य हडपना चाहते है। हमारे देशवासी चुप है। मुझे राज्य का मोह नही, देश से प्रेम है। परन्तु क्या करुँ जब मेरे देशवासी ही कायर निकल गए गद्दार हो गए, मै अकेला, क्या करूँ। किसके लिए मरूँ। कायरो का शासक होने से अच्छा है कगाल होना, गद्दारो का साथ देने से अच्छा है मर जाना। जिस राज्य मे धोखा है उसके राज्यपद से इस्तीफा दे देना मै अच्छा समझता हूँ।

(वह दुखी होकर अपना इस्तीफा लिखता है और उसे दूतो की ओर बढ़ाते हुए कहता है) बुझी हुई राख मे भी आग होती है, छुपी हुई कराह में भी आवाज होती है। यह मेरा त्याग पत्र तुम्हारी उष्ण तृष्णा को बुझाने के लिए सागर होगा, और तुम्हारी युद्ध भावना के लिए शमशान घाट होगा।

(दूत पत्र लेकर सर झुका कर चले जाते है)

पटाक्षेप

(दृश्य तीन समाप्त)

(दृश्य चार)

(लाहार का दरबार गवर्नर लारेस एव अन्य दरबारी बैठे है)।

दूत–(प्रवेश करके) हुजूर, सरकार की जय हो हुजूर मुल्तान के राजा ने अपना इस्तीफा दे दिया है। (लिफाफा लारेस को देता है)

लारेंस (खुशी से) ठीक है हम यही चाहता भी था (सरदारो से) हम चाहता है कि अव तुम लोगो में से कोई मुल्तान की बागडोर सम्भाले। मेरे ख्याल से खान सिह इसके लिए ठीक होगा। खान सिह तुम तैयार है न।

खान सिह–हुजूर मै आपके हुक्म की तामील जी जान से करूँगा।

लारेंस–वेरी गुड, हम ऐसा ही आदमी ढूँढ़ता था। हॉ वहॉ हम तुम्हे अकेला नही भेजेगा। तुम्हारी मदद के लिए लेफ्टिनेट एग्न्यू एवं एन्डरसन तुम्हारे साथ जाएगे।

खान–जी हुजूर बहुत ठीक है।

(तीनो का प्रस्थान)

पटाक्षेप

दृश्य पांच

एक जगल– (एक वृक्ष के नीचे तीन चार नवयुवक एकत्रित है वे परस्पर वार्तालाप करते है)

उदय–उस दिन जब दरबार में अग्रेजी दूतो के सामने हमारे राजा मूलराज ने भाषण दिया तो मेरे हृदय पर एक घाव सा बन गया। क्या करूँ उस समय बोल न सका, परन्तु आज मुझे यह भूल कसकती है। हमारे लिए अब भी समय है। मनचले अग्रेज अपने गर्व मे कुछ सरदारो को हमारे देश पर शासन करने के लिए जरूर भेजेगे। आओ हम यही बैठकर उनकी प्रतीक्षा करे और अपने राजा के त्यागपत्र का बदला ले।

विजय–सचमुच तुम विजय हो। हमारी सोयी हुई वीरता को तुमने जगा दिया। इस रास्ते से जो भी अंग्रेज आज गुजरेगा, उसे हम यमपुरी भेज देगे।

(वे लोग वही घात लगाकार बैठ जाते है। कुछ देर बाद उसी रास्ते से तीन अश्वारोही गुजरते है। उनकी वेशभूषा अग्रेजो की सी थी। घात मे बैठे हुए नवयुवको ने परस्पर संकेत किया और वे अश्वारोहियो के पास गए उन्होने अश्वारोहियो को सलाम किया। अश्वारोही रुक गए।)

एग्न्यू (नवयुवको से) तुम लोग जानता होगा, मुल्तान के राजा ने अपना राज्य हमे दे दिया। अब हम तुम्हारा राजा है।

एक नवयुवक–हॉ हुजूर हम आप जैसा राजा पाकर बहुत खुश है मगर हुजूर हम आपकी भलाई के लिए कुछ भेद की बाते बताना चाहते हैं

१२६७०

एग्न्यू–हॉ, हॉ अगर तुम लोग हमारी मदद न करेगा तो हम कैसे राज करेगा।

नवयुवक–

हॉ हुजूर हम अवश्य आपकी मदद करेगा, एकान्त मे आ जाइये। जिससे कोई देख-सुन न ले।

(दोनो अंग्रेजो को एक किनारे झाड़ी के पास ले जाकर हत्या कर देते है। झाड़ी मे चिल्लाहट)

(पटाक्षेप)

दृश्य छह

(लाहौर का दरबार लारेस और अन्य दरबारी बैठे है)

(खान सिह अस्त-व्यस्त मुद्रा मे दरबार मे प्रवेश करता है और रोते हुए कहता है)

खान सिह–हुजूर गजब हो गया, मुझसे कहा नही जाता।

लारेस–कहो कहो क्या बात है।

खान सिह–(रोते हुए) सरकार वहां के लोगो ने लेफ्टीनेटो की हत्या कर दी।

लारेस– (त्यौरी बदल कर गुस्से मे) यह सब तुम्हारी चाल है तुम्ही ने हमारे भाइयो के साथ धोखा किया।

खान सिह–(लारेस का पॉव पकडकर) नही, नही सरकार मैने ऐसा नही किया कुरान कसम। मै बेगुनाह हूँ।

लारेस–तुम दगाबाज और झूठे हो। काला लोग कभी बेकसूर नही होता। (सैनिको से ले जाओ इसे हवालात मे डाल दो। (सैनिक उसे घसीटते हुए ले जाते है।)

खान सिह–(रोता हुआ कहता है) मै बेगुनाह हूँ, मै बेगुनाह हूँ। मैने ऐसा नही किया।

लारेस–(दात पीसते हुए) तुमने हमारे भाइयो का खून किया है, मैं तुम्हारे भाइयो के खून की नदी बहा दूगा। (दरबारियो की ओर घूमकर) शेर सिह तुम लाहौर के सिपहसालार हो यह हमारे भाइयो की नही लाहौर के हुक्म की हत्या है। तुम्हारी ताकत की बदनामी है। तुम्हारा फर्ज है कि तुम अपनी सेना लेकर जाओ, और गद्दारो को इसका सबक सिखा दो।

शेर सिह–हम अपना फर्ज अदा करेगे।

लारेस–लाहौर के सिपहसालार से यही उम्मीद थी।

(परदा गिरता है। परदे के पीछे सेना के प्रस्थान का वातावरण घोड़ो के पैर की खटपटाहट और कोलाहल

दृश्य सात

(दृश्य परिवर्तन)

(परदे के पीछे साधु एक गीत गा रहा है)

गीत

पिजरे के पछी रे मत कर इतना गुमान

भय चितामय जीवन तेरा, बालूघर जलवीचि बसेरा

जाने कब ऑधी आ जाए ऊचे महल तुरत ढह जाएँ

हित अनिहित पहचान, पिजडे के पछी रे मत कर इतना गुमान।

(2)

तू निज पथ को भूल गया है, झूठे यश मे फूल गया है।

मृग-तृष्णा के भ्रम मे पडके, मद मे आके मिथ्या पद के

करने चला बलिदान, मतकर इतना गुमान

(3)

भारत मॉ को शीश झुका दे विछडे जन को मन मे मिला दे

ऑख खोल तम दूर हटा दे धूमिल मन मे दीप जला दे

अमर बने तेरा नाम, मत कर इतना गुमान

(शेर सिह इस गीत का ध्यानपूर्वक सुनता है, और गम्भीरतापूवक अपने एक सरदार से कहता है)

शेर सिह—दिलेर खॉ, इस गीत ने तो मेरा हृदय ही बदल दिया। जीवन की कितनी सुन्दर परिभाषा है इन पक्तियो मे। मिट्टी की ढेरी के लिए मै इतना पाप करूँ। अपने ही भाइयों का खून करूँ। और उनके खून से रगे हुए महल मे स्वप्नों का ससार बनाऊँ न, न, न, दिलेर खॉ मुझसे यह काम न होगा। धोखेबाजो का साथ न देना गद्दारी नही, वरन अपने को धोखा देना गद्दारी है। दिलेर तुम जाओ, और राजा मूलराज को विश्वास दिलाकर आदरपूर्वक लिवा लाओ। हम उसका आदर करेगे, उसे गले से लगाएँगे। उसके साथ अपने देश को प्राणो की भेंट देगे।

(दिलेर खॉ जाता है और थोड़ी ही देर मे मूलराज के साथ प्रवेश करता है)

मूलराज (आकर शेरसिह से) भाई मैने तो अपना राज्य भी दे दिया अब क्या चाहते हो मेरी जान लेना। मैने उन अग्रेजों का खून नही किया फिर यदि तुम मुझे दोषी

समझते हो तो लो मेरी जान भी हाजिर है। मै खूनी तो न कहलाऊँ। (सिर झुका देता है।)

शेरसिह–(द्रवीभूत होकर, मूलराज को गले लगाकर कहता है) मूलराज तुम्हारा हृदय पवित्र है। तुम पूर्णतया निर्दोष हो। आओ हम तुम दोनों मिलकर अंग्रेजो के चंगुल से देश को मुक्त कराने के लिए अपना तन मन धन अर्पित कर दे।

मूलराज–भाई हमे अंग्रेजी दूतो का विश्वास नही।

शेर सिंह–तुम्हे मेरा विश्वास नही। तो लो मै अपने वस्त्र और अस्त्र शस्त्र सब कुछ फेक देता हूँ। (अस्त्र-शस्त्र फेकते हुए कहता है) चलो मैं भी एक साधारण पुरुष की भाँति तुम्हारे साथ हमेशा देश की सेवा करने के लिए प्रस्तुत रहूँगा।

मूलराज–न भाई न। तुम इसी वेश मे रहो। इस प्रकार तुम देश की अधिक सेवा कर सकते हो, ऐसे अवसर पर।

शेर सिह (सैनिको से) बहादुरों क्या तुम लोगों ने हमारी प्रतिज्ञा सुनी। क्या तुम भी तैयार हो अपने देश के लिए सब कुछ निछावर करने को। अपने भाइयो का दुख दूर करने के लिए अपनी बहू बेटियो की लाज बचाने के लिए, क्या तुम अपना सब कुछ देने को तैयार हो।

सभी सैनिक–हम लोग बिल्कुल तैयार है।

शेर सिह–तुम ऐसे वीरो से यही आशा थी (सब का धीरे-धीरे प्रस्थान)

पटाक्षेप

(दृश्य आठ)

(लाहौर का दरबार–लारेंस ह्युगफ एव अन्य अंग्रेज बैठे है एक दूत का प्रवेश)

दूत–(घबराकर) सरकार अन्धेर हो गया, अन्धेर। शेर सिह अपने सरदारों के साथ राजा मूलराज से मिल गया। वे लोग सरकारी सेना से मुकाबला करने के लिए तैयार है

ह्युगफ (बौखलाकर) सब काले गद्दार किसी का कुछ भी भरोसा नही, हम खुद गद्दारो को सजा देगा। हम कल ही मार्च कर देगे।

(पटाक्षेप)

[चिलियान वाला स्थान पर मूलराज एव शेरसिह ने अंग्रेजो का डटकर मुकाबला किया किन्तु विजय अंग्रेजो की हुई। भारतीयों का कत्ल किया गया और अनेक यातनाएं दी गई।]

नवम दृश्य

(स्थान लखनऊ नवाब वाजिद अली शाह का दरबार शाही दरबार की सम्पूर्ण

शराब की बोतले रखी हुई है वाजिद अली एव उसके दरबारी शराब पीते हुए, एक वेश्या का नृत्य शुरु है, गाना हो रहा है)

ऐ सनम इस हुस्न का पैगाम ही तो जाम है।
बस गई खिल्कत में जन्नत है शराब पोशी में
इस नजर ए मय को तुम माशूक को पिलाए जाओ
है छुपी मजिल तुम्हारी इस नकाबपोशी मे।
(2)
मैं तो हूँ बदनाम ऐ आशिक तेरी खामोशी मे
है नही कुछ गम मुझे अब नेकी या नामोशी में
पर सरे बाजार मै तुमको यही बताती हूँ
लुट न जाए काफिले जलवा इसी बेहोशी मे
बस गई खिल्कत में जन्नत है नकाबपोशी में

(सारे दरबार मे वाह-वाह, चे खूब चे खूब, जवाब नही, शुबुबान अल्ला मुकररे इरशाद की आवाजे और कह-कहे गूँज रहे है)

एक दरबारी--(नशे में) वाह रुखसाना। क्या खूब है, छुपी है मंजिल तेरी बस इस नकाबपोशी मे। जी में आता है कि तुम्हे जेब में रख लूँ।

दूसरा-- अमे यार जेब तो फट जायगी मलमल की है न, दिल दिल मे।

पहला-- माशा अल्ला, माशा अल्ला अबे अक्ल को भी बोतल मे पी गया। जेब तो रखने के बाद फटेगी दिल तो रखने के पहले ही फाड़ना पड़ेगा।

दूसरा--गुस्ताखी माफ हो हुजूर, दिल में रखी हुई चीज ज्यादा दिनों तक रहती है।

पहला-- अरे मौलाना हमे सिरका तो नहीं डालना है। जेब मे रहेगी तो जब चाहा निकाल लिया, और मजिल तक पहुँच गए, मगर दिल तो निकालते वक्त भी फाड़ना पड़ेगा और रखते वक्त भी, आदाब अर्ज, आदाब अर्ज।

(सहसा एक दरबान का शीघ्रतापूर्वक प्रवेश)

दरबान (झुककर दरबारी लहजे में) अंग्रेजी रेजीडेंट हुजूर आउटरम साहब बहादुर तशरीफ ला रहे हैं।

(आउटरम का प्रवेश)

(**प्रवेश करके नवाब को सलाम करता है और कहता है) आल राइट जैसा सुनता या वैसा देखता भी है**

एक भॉड (विनोद एवं हास्य की मुद्रा में) नही साहब, अभी आप **कहा देखता** है। अभी तो आपने चेहरा ही देखा है। जब आप सब कुछ देखेगा तो आप **नाच उठेगा** सरकार। रुखसाना जान आफत की पुड़िया है सरकार, ये ऑखे जिस पर पडी बस **वह** घायल हुआ। खुदा न करे हुजूर, कि ये ऑखे आपर पर चढ़ जाय।

आउटरम (हुश आई डिसलाइक इट)।

भॉड–हुश्न हुश्न का क्या कहना है हुजूर, जैसे आपके गले को यह टाई घेरे है सरकार, वैसे ही इसकी पतली कमर के चारो ओर हुश्न की जजीर है गरीपखर, क्यो रुखसाना, (नर्तकी नाचने की मुद्रा मे कमर हिलाती है, घूँघर बज उठते हैं) भॉड कहता है वाह क्या अफसाना है, रुखसाना बस तेरा ही है जमाना, दिल मे आता है हम भी हो जाय जनाना (आउटरम की कमर मे हॉथ डालकर) क्यों साहब आप भी हो जायगा जनाना।

आउटरम–(गुस्से मे) डैमफूल (कमर से हॉथ छुडाता है और भॉड को झटक देता है।)

भॉड– (गिरते हुए) यही मुहब्बत का शिकवा है हुजूर।

आउट– (नवाब से) नवाब साहब क्या यही इन्तजाम है।

नवाब– नही साहब जाम है, आइए (शराब का प्याला बढ़ाते हुए)

आउट– (गम्भीरता से) तो हमारा यह फरमान है।

नवाब - मुहब्बत का भी यही पैगाम है।

आउटरम (गुस्से मे) डोन्ट यु हियर मी प्लीज।

एक भांड–धन दौलत सब कुछ नाचीज।

आउटरम–नवाब साहब, हम आपको यह बताने आया है कि आपके राज मे बदअमनी है इस तरह से राज नहीं चलेगा। आपके राज में अमन चैन कहा।

वाजिद– (नशे में) इसी बोतल मे।

आउट– (आदाब के साथ) हम आपको बोतल देगा।

वाजिद–शुक्रिया-शुक्रिया।

आउट–मगर आप हमें क्या देगा बोतल के बदले में।

वाजिद (नशे में) हम क्या देगा बोतल के बदले मे, बोतल को छोड़कर तो हमारे पास कुछ है ही नही, हमे बोतल मिले बस हम मस्त रहेंगे और कुछ न चाहिए। मय हो मयखाना हो मस्ती भरा जमाना हो।

आउट–हम आपको सब कुछ देगा। मगर जब आप हमे इसकी मन्जूरी देगा (एक लिफाफा बढ़ाता है)

वाजिद–हम मजूरी, मजदूरी सब कुछ देगा, सब कुछ देगा।

आउटरम–तो लीजिए (एक लिफाफा पकडा देता है।)

वाजिद–(लिफाफा फाड़कर पत्र पढ़ता है।) मगर हम तो रियासत, सियासत सब कुछ छोड़ दिया, . . .।

मेरी तो छुपी है मजिल बस इस नकाबपोशी में, क्यो रुखसाना (नर्तकी आदाब के साथ स्वीकार करके थिरक उठती है)

आउट–तो रियासत किसे दे दी नवाब साहब।

नवाब–उसे जिसने हमे यह दिया (बोतल की ओर इशारा करके।)

(नाच गाना पुन प्रारम्भ हो जाता है।)

(आउटरम नवाब की इस बेअदबी से बौखला उठा। वह कुछ सिपाहियो के साथ बेगम हजरत महल के हरम मे पहुँच गया। अंग्रेज सिपाहियो ने बेगम की दासियो से छेड़खानी की। आउटरम गुस्से मे बेगम के सामने पहुँचता है।)

(बेगम हजरत महल अपने कक्ष मे है, आउटरम एव उसके सिपाहियो को यकायक देखकर घबरा जाती है किन्तु फिर संयत हो जाती हैं।)

आउटरम (बेगम के सामने पहुँचकर सलाम करने के बाद नम्र स्वर किन्तु व्यग्य पूर्वक कहता है –बेगम साहब, नवाब साहब तो बोतल के नशे मे है और आप..... !

बेगम– (तिरस्कार एव गुस्से की मुद्रा मे) क्या मतलब?

आउट–मतलब यह कि आपके राज मे हर जगह बदअमनी है।

बेगम–बदअमनी कैसी। जब तक मेरे हाथ और दिल-दिमाग है।

आउट (बीच मे ही बात काट कर) रियासत का इंतजाम ये नरम हाँथ न कर सकेगा। और इज्जत तो आपकी नही, बोतल की है। आपके ये हाथ (बेगम का हाथ पकड़ने की कोशिश करता है।)

बेगम–(गुस्से मे आउटरम के मुँह पर एक चपत मारते हुए) दूर हट कुत्ते, एक औरत की बेइज्जती करते शरम नही आती।

(आउटरम खिसियाकर बेगम को पकड़ना चाहता है। और दासियाँ आ जाती है चिल्लाहट होती है आउटरम गुस्से मे बाहर निकल जाता है।)

(हरम से निकलकर जरद महल पहुँचा वहाँ नवाब वाजिद अली शा[illegible] बैठा था)

आउटरम– (आदाब के साथ) नवाब साहब, अब अवध का इन्तजाम आपसे न हो सकेगा। हमारी सरकार ने आपको बारहा आगाह किया किन्तु आपकी रियासत का इतजाम बद से बदतर होता जा रहा है, अब आपके लिए यही वाजिब होगा कि आप खुद बखुशी अवध की सल्तनत हमारे जिम्मे कर दे। हम ही अब इसे दुरुस्त करेंगे। यदि आप ऐसा नही करते तो हमे फौजी कार्यवाही करनी पडेगी, ऐसी हालत मे खून-खराबा बहुत होगा और आपकी शान शौकत पर भी आँच आएगी। हमारे गवर्नर साहब बहादुर ने यही सब सोच समझकर आपके सामने यह सुलहनामा भेजा है। (मुहरबन्द लिफाफा बढाता है) आप मिहरबानी से इसे कबूल करे, और इसकी मन्जूरी दे। खुद अमन चैन से रहे, और हमे भी रहने दे। अवध के सल्तनत की बागडोर अब हमे सभालने दे।

नवाब– (लिफाफा) हॉथ मे लेता है फाडता है गम्भीरता और गौर से पढ़ता है।) लेकिन मैने कौन सी गलती की, इस सुलहनामे के मुताबिक मेरी क्या हैसियत होगी। मेरे महल की इज्जत मेरी शान मेरी रुखसाना का राम कहॉ होगा। न, न, न मुझे यह सब मजूर नही। मै अपनी इन्द्रसभा तुम्हे नहीं दे सकता। तुम्हारी खुशी के लिए मैने अपनी सेना बर्खास्त कर दी, अपने सिपाहियो की पगडी उतरवा दी, फिर भी तुम्हे सब्र नही। अब मै मजबूर हूँ। मेरे पास ताकत नही कि तुम्हे इस बेइज्जती का सबक सिखा सकूँ। अवध का नवाब आज तुम्हारी मिहरबानी पर है–जिसने तुम्हे पनाह दी उसे तुम आज उसका वतन भी नही दे सकते। आज उसे अपने घर मे रहने का हक भी नही। आज मेरी फरियाद भी गुनाह है, लेकिन मै इस तरह बेइज्जत होना पसन्द नही करता तुम्हारी यह चाल तुम्हारी यह मजाल, न, न, न मै तुम्हें कुछ न दूँगा। मै हरगिज, हरगिज इस फरेबी सुलहनामे पर दस्तखत न करूँगा।

(आउटरम के इशारे पर नवाब को बन्दी बना लिया गया। महलो को लूटा गया। उसकी बेगमो और दासियो को अपमानित किया गया। रोदन एव क्रन्दन का करुण दृश्य)

दृश्य समाप्त

दृश्य दस

(स्थान कलकत्ता डलहौजी अपने कक्ष मे बैठा है। गम्भीर मुद्रा मे एक पत्र पढ़ रहा है।)

पत्र–योर इक्सिलेंसी।

"जब कलकत्ते की बन्दूके आपकी सलामी के लिए दग पड़ी थी हमारे हृदय की भावनाएँ भी आपको मुबारकबाद देने के लिए उमड़ पड़ी थी। जब कलकत्ते के हमारे भाइयो को आपका प्रत्यक्ष दर्शन करने का हक है तो क्या हम दूरस्थ बन्धु आपकी कृपा भी नही पा सकते। हम बर्मा मे रहकर आपकी उन्नति चाहते है। हम चाहते है कि हमे आप बर्मीजो की यन्त्रणाओं से शीघ्र ही मुक्त कराने का प्रयत्न करेंगे हमें पग-पग पर अपमानित किया जाता है और व्यापार करने के लिए जुर्माना देना पड़ता है आखिर

अब तो हम सौदागर नही। यदि आपके द्वारा वर्मा यूनियन जैक की छत्र छाया मे न लाया गया, तो भविष्य मे इसकी आशा नही।

सादर, हम है आपके देशवासी।

डलहौजी–(क्रोध मे घटी बजाता है एक चपरामी का प्रवेश)

चपरासी–(हॉथ जोडकर सर।)

डल–लैम्बर्ट को बुलाओ।

लैम्बर्ट– (लैम्बर्ट प्रवेश करके सैल्यूट करता है।)

हलहौजी–(आवेश मे) लैम्बर्ट तुम्हें याद होगा। वर्मा के लोगो को दुरुस्त करने के लिए मैने तुम्हे आदेश दिया था। तुमने अब तक क्या किया, वर्मा के लोग आजकल वहुत बढ़ गये है। हमारे भाइयों पर जुर्माना कर देते है। कालो को हमे दण्ड देने का क्या हक। हम इन्हे मनमानी नही करने देंगे। चाहे जो हो, वर्मा को हमें अपने राज्य मे मिलाना है।

लैम्बर्ट (सर झुकाकर) योर हाइनेस, मुझे क्या हुक्म है।

डल–हम वर्मा के राजा से सुलह नही चाहते। हमें तो उसे जीतना है। मै तुम्हे तीन सैनिक जहाजे देता हूँ। तुम इनके साथ रगून जाओ, वहॉ पहुँचकर वर्मा के राजा से अपनी क्षतिपूर्ति की मॉग करो। यदि वह नही देता। हम उस पर चढ़ाई करेंगे। हम वर्मा को अपने राज्य मे मिलाएगे।

लैम्बर्ट–जो आज्ञा योर हाइनस (सर झुकाकर जाता है।)

(पटाक्षेप)

दृश्य ग्यारह

(वर्मा का दरबार। राजा एव सभी मन्त्री अपने स्थान पर यथावत आसीन है। दरबार में एक चपरासी प्रवेश करता है।)

चपरासी–महाराजा की जय हो। महाराज एक अंग्रेजी सिपाही आया है। महाराज से मिलना चाहता है।

राजा–आने दो।

अंग्रेज सिपाही (प्रवेश करके सर झुकाता है)

महाराज हिज हाइनेस गवर्नर साहब बहादुर ने एक पत्र भेजा है। (एक सील बन्द लिफाफा देता है।) राजा पत्र लेता है लिफाफा फाड़कर पढ़ता है और पत्र को फाड़कर फेंक देता है। अंग्रेज सिपाही खड़ा रह कर यह सब गौर से देखता है और चला जाता है

राजा–(गुस्से मे) अंग्रेजो की यह धमकी। चोरी और सीना जोरी। उन उद्दण्ड व्यापारियों ने हमारे नागरिको की हत्या की। हमने उन्हें प्राणदण्ड न देकर विदेशी होने के नाते केवल जुर्माना कर दिया परन्तु यह भी इन्हे बरदाश्त नही।

उन्हें ६०००/- रुपए क्षतिपूर्ति के लिए दे और अपने गवर्नर को रगून से वापस बुला लें। इन फिरंगियों की इतनी धृष्टता।

कुछ सरदार–(एक स्वर में) नहीं, नही हम ऐसा नही होने देगे। हम इसका बदला लेगे। उन्हे उनकी धृष्टता का सबक सिखा देंगे।

राजा–(सोचकर) हमें ऐसे अवसर पर गंभीरता से कार्य करना चाहिए। भारत ने शरणगतो की सर्वदा रक्षा की है। हमारे धर्माचार्यों ने अहिंसा का उपदेश दिया है। अत यदि हम अपने आदर्शों का पालन करते हुए इनकी गलतियो को सहानुभूति पूर्वक देखे तो क्या नुकसान। युद्ध लेना अभी ठीक नही। स्वर्णभूमि मे रत्नो की कमी नहीं। हम एक टुकड़ा फेंककर इनका स्वभाव पहचान लें तो क्या हर्ज।

रही बात गवर्नर के स्थानातरण की, तो हमारे देश मे सच्चे नागरिको की कमी नही। न एक सही दूसरा . . ।

सभी दरबारी–जैसी आपकी आज्ञा।

(पटाक्षेप)

(लैम्बर्ट का कक्ष कुछ सैनिक और सलाहकार एकत्रित है। गुप्त मंत्रणा सी हो रही है। लैम्बर्ट एक पत्र पढ़ने के बाद कहता है।)

लैम्बर्ट–देखा न आप लोगो ने। सॉप भी मर गया, और लाठी भी न टूटी। मैं जानता हूॅ ये इन्डियन बड़े बुजदिल होते है। हम इन्डिया के राजा है। हमारा मुकाबला कोई नही कर सकता, किन्तु हमें वर्मा को जीतना है। मिस्टर डीबिल, तुम अपने साथियों के साथ जाओ। देखो नया गवर्नर तुम्हारा कैसा स्वागत करता है।

डीबिल–ओ०के० सर, हम अभी अपने दूत द्वारा सन्देश भेजता है।

(डीविल ने अपने सिपाही से वर्मा के गवर्नर के पास सन्देश भेजा) थोड़ी देर मे दूत लौटकर डीविल के पास आता है।)

(डीबिल कक्ष मे बैठा है। अंग्रेजी दूत लौटकर आता है वह डीबिल से कुछ कहता है। डीबिल उठकर लैम्बर्ट के पास जाता है। लैम्बर्ट अपने कक्ष मे कुछ लिख रहा है। डीबिल उसके कक्ष मे प्रवेश करके सैल्यूट करता है।)

लैम्बर्ट–हल्लो क्या खबर है। नये गवर्नर ने अच्छी खातिर की होगी।

डीबिल–नो सर हम लोगो की बड़ी इन्सल्ट हुई। उसने कहला भेजा, साहब सो रहा है। अभी भेट न होगी।

लैम्बर्ट (दांत पीसते हुए) मैं तो कहता था इन्डियन बड़े धोखेबाज होते हैं।

उसने कहा होगा। "हम अग्रेजो से नही मिलेंगे। हमारा धर्म नष्ट हो जायगा। अब मै देखूँगा ये और इनके धर्म हमे कैसे रोक सकते हैं। हम इसकी खबर हिज मैजिस्टी गवर्नर जनरल को भी देगे। हम डाइरेक्ट ऐक्शन लेगे। हम गवर्नर जनरल को इसकी खबर देगे।

(लैम्बर्ट ने गवर्नर जनरल डलहौजी को एक पत्र लिखा। गुस्से मे पत्र लिखने के बाद उसने एक विशेष दूत को यह पत्र देकर कहा)

लैम्बर्ट–हिज मैजिस्टी गवर्नर जनग्ल अव खुद वर्मा पर चढ़ाई करेंगे और वर्मा की सारी शक्ति को हम मटियामेट कर देगे)

पटाक्षेप

(डलहौजी ने बाद में वर्मा पर चढ़ाई की और अनेक हत्याए एव नृशंसताऍं की गई।

(अक द्वितीय समाप्त)

अंक तृतीय दृश्य प्रथम

(एकान्त कक्ष मे नाना साहब, रंगो बापू, अजीमुल्ला खाँ एकत्रित है। गम्भीर विषय पर परामर्श हो रहा है)

नाना साहब–हवन मे आहुति पड चुकी है। लार्ड डलहौजी ने किसी न किसी बहाने हमारी रियासतो को अपनी साम्राज्यवादी आग की लपेट मे ले लिया है। अवध के नवाब, तथा झॉसी की रानी की रियासते हडप ली गई है। अग्रेजी शासन की ज्वाला मे सम्पूर्ण भारत स्वाहा हो रहा है। फिर भी अब तक हमारी ऑखे नही खुली। अब हमे खामोश नही बैठना चाहिए। अन्याय और अत्याचार के खिलाफ हमे क्रान्ति करनी ही पडेगी। आपके दिल मे भी आग है। आप लोगो ने विदेश यात्रा भी की है। क्या आप बताएगे कि अपने पडोसी राज्यो के साथ अग्रेजो का क्या व्यवहार है?

रंगो बापू–जहॉ तक मेरा अनुभव है मै कह सकता हूँ कि अग्रेज पूरे अवसरवादी है। अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए ये अपना स्वाभिमान भी बेच सकते है, अपने सिद्धान्त भी बदल सकते है। इनके पड़ोसी देश भी इनकी अवसरवादी नीति से असतुष्ट है। आशा है हमारी क्रान्ति मे वे हमारा समर्थन करेगे।

अजीमुल्ला–आपका ख्याल बिल्कुल दुरुस्त है, मै भी इसी बहाने टर्की और मिस्र आदि देश गया। वहॉ के जिम्मेदार लोगो से बात की। मुझे ऐसा लगा कि अग्रेजो का इस समय कोई एतबार नही किया जा रहा है।

नाना–आप लोगो की बातों से स्पष्ट है कि इस समय परिस्थिति हमारे अनुकूल है। यदि हम लोग सगठित होकर इन्हें एक धक्का दे दें, तो फिर कोई कारण नही कि इनके स्वप्नो का साम्राज्य धराशायी न हो जाय। यदि हम एकजुट होकर अपने लक्ष्य पर चले तो ईश्वर की कृपा से हमारा अभियान अवश्य सफल होगा।

दोनो एकसाथ–हमारा भी यही विश्वास है।

नाना–परन्तु हम केवल विश्वास मात्र से इतना बडा कार्य नही कर सकते। इसके लिए हमे त्याग करना होगा। हमारी तपस्या तब पूर्ण होगी, जब हमारे कोमल गात देश–प्रेम की ज्वाला मे झुलस जाएगे। जब हमारा मन भारत माँ की उदासीन मूर्ति पर केन्द्रित हो जाएगा। जब प्रत्येक भाई की कुटिया हमारा घर होगा, जब हमारा लक्ष्य स्वार्थ नही देशोद्धार होगा। हमें इस पुनीत कार्य के लिए सगठन करना होगा। सुसगठित क्रान्ति ही हमारी स्वतन्त्रता की बैजयन्ती होगी।

अजीमुल्ला–मै मुसलमान हूँ। हिन्दुओं को औरगजेब का बरताव भूला न होगा। मगर मै कह सकता हूँ कि सब एक से नही होते। इतिहास गवाह है कि मौत को सर पर खड़ी देखकर भी स्वामिभक्त पठान मीर मुहम्मद शाह ने अलाउद्दीन से कहा था "यदि मेरे घाव अच्छे हो जाते तो तुम्हे कत्ल कर देता और स्वामी हमीरदेव के पुत्र को गद्दी पर

बिठाता, फिर अब तो जमाना भी बदल गया है। अब मुसलमान विदेशी नही रह गए। उनका जेहाद अब हिन्दुओं पर न होगा। वह होगा हिन्दुस्तान के दुश्मनो पर।

नाना–भाई अजीम, तुम्हारा देश-प्रेम अद्वितीय है, तुम्हारा उत्साह स्तुत्य है। किन्तु सब एक से नहीं होते। देश के बिखरे हुए रत्नो को एक सूत्र मे गठित करना ही हमारा पहला कदम होना चाहिए।

अजीम–आप साहस देते रहें फिर देखे आज का मुसलमान क्या करके दिखाता है। अब उसकी ताकत अपने वतन की तबाही के लिए नही भलाई के लिए बढ़ेगी।

नाना–बापू, आपकी क्या राय है।

रगो बापू–मुझमे इतनी ताकत नही कि अकेले अनेक शत्रुओं को मार सकूँ, परन्तु इतना विश्वास रखिए कि मेरी एक आवाज हजारो को जगा देगी।

नाना–बस हमे यही चाहिए। आप दक्षिण भारत के नागरिको को उत्साहित करे, शेष काम हम और अजीम पूरा कर लेगे। परन्तु इतना हमेशा ध्यान रहे कि हमारा भेद शत्रुओं को कभी न मिलने पाए। हमारे युवक उत्साहित होकर ऐसा कार्य न कर बैठे कि शत्रुओं को सावधान होने का अवसर मिले।

रगो बापू–मै पूरी सावधानी के साथ कार्य करुँगा, आप लोग अपने प्रयत्न मे अग्रसर हो। भगवान आपका मगल करे।

(रगो बापू का प्रस्थान दोनो प्रणाम करते है)

नाना–अजीम अब हमें क्या करना चाहिए।

अजीम–लोग कहते है कि बड़ो के नाम पर काम करने से कामयाबी जल्दी हासिल होती है। इसलिए मेरी राय तो यह है कि हमें अपनी कामयाबी के लिए मुगल बादशाह बहादुर शाह का सहारा लेना जरूरी है।

नाना–बहुत सुन्दर। हम इस काम को जितनी जल्दी करें उतना ही अच्छा होगा।

अजीम–हम कल ही दिल्ली के लिए रवाना हो जाएंगे।

(पट परिवर्तन)

दृश्य दो

[दिल्ली का लाल किला। बादशाह बहादुर शाह, साम्राज्ञी जीनत महल, अजीमुल्ला खाँ, नाना साहब एक कक्ष में आसीन है। बड़ी गुप्त मन्त्रणा हो रही है।]

नाना साहब–शहंशाह सलामत, मैं आपके सामने एक बच्चा हूँ। मगर फिर भी आपकी सहानुभूति देखकर कुछ कहने की हिम्मत कर रहा हूँ। हमारा अंग्रेजों से वैमनस्य नया नहीं है कई पीढ़ियों से चला आ रहा है आप तथा हमने मिलकर इनके अत्याचारों का विरोध किया मगर दुर्भाग्यवश ये हमें हमेशा पीसते आए हैं इनके कृत्यों का स्मरण,

कर हमारे रोंगटे खडे हो जाते है। हमारे अन्दर प्रतिशोध की भावना कौध उठती है। इन्होने हमारे बादशाह शाह आलम के सारे अधिकार छीन लिए थे। उन्हे इलाहाबाद मे एक साधारण पुरुष की भॉति कैद रखा था। हमारे पूर्वज महादाजी सिधिया ने उन्हें स्वतन्त्र करके दिल्ली पहुँचाया था। शहँशाह ने खुश होकर उन्हे निजामुल्मुल्क की पदवी दी थी। उन्होने गुलाम कादिर को शहशाह को अँधा बनाने के फलस्वरूप दड दिया था। हमारा आपका सम्बन्ध घनिष्ठ हुआ था। इनसे वह भी न देखा गया। हमारी और आपकी आजादी छीन ली, हम अपने ही देश मे गुलाम हो गए।

जब आपने माननीय राजाराम मोहन राय को अपने प्रतिनिधि के रूप मे भेज कर अपनी पेन्शन की प्रार्थना की थी तो उन्होने आपका अनादर किया था। अंग्रेजों ने समझा होगा कि अब तो शहँशाह हम है उन्हे दूत भेजने का क्या अधिकार। लार्ड डलहौजी ने हम सबकी रही सही इज्जत भी मिट्टी में मिला दी। अब हमारे पास क्या रहा। तडप-तडप कर मरने से अच्छा है कि हम एक आग जला दे जिसकी ज्वाला मे या तो उन्हे भस्म कर दे, या स्वयं कूद कर इस दुश्शासन से मुक्ति पा जाय।

हम इन्हे एक बार दिखा दें कि बुझती हुई दीप शिखा मे भी लौ होती है। बुझती हुई चिनगारी भी विशाल उपवन को भस्म कर सकती है।

जीनत महल--(जोश में) ठीक है, मै भी रजिया बेगम, और नूरजहॉ की तरह इन्हे अपनी ताकत दिखा दूँगी।

बादशाह--जवान, तुम्हारी सभी बाते हमे पसन्द है। हम हर तरह मे तुम्हारे साथ है। दिल्ली मे यह काम मेरे जिम्मे। बाकी पूरे देश में तुम एक नया जोश पैदा कर दो।

पुत्र--क्या हम किसी से कम हैं हम एक एक अग्रेज को मौत के घाट उतार देगे।

नाना--हमे अपने बादशाह से यही उम्मीद थी।

बादशाह--दिल्ली मे इसे करने की जिम्मेदारी मेरे ऊपर। तुम बेफिक्र हो। खुदा हाफिज।

नाना एवं अजीम--बादशाह सलामत की जय हो।

(दोनों हाथ जोड़कर सिर झुकाते है और चले जाते है)

पटाक्षेप

दृश्य तीन

(कलकत्ता महल के एक कक्ष में नाना साहब, अजीमुल्ला खाँ, नवाब वाजिद अलीशाह, बेगम हजरत महल, अली नकी खॉ और अन्य कुछ लोग एकत्रित है। कुछ मन्त्रणा हो रही है।)

हजरत महल--हमें खुशी है कि हमारे मुल्क में तुम्हारे जैसे जोशीले जवान भी हैं

मेरे दिमाग में आउटराम की शरारत, अंग्रेज सिपाहियों का जुल्म अब भी ताजा है। खुदा, वह दिन कब आएगा जब मैं इसका बदला ले सकूंगी।

अली नकी खॉ–खुदा कसम, अगर मेरी चले तो मैं अंग्रेजों को ऐसा सबक सिखा दूं कि ये फिर ऐसी गुस्ताखी न कर सकें।

अजीमुल्ला खा–मगर दोस्त, सिर्फ मन के मसूबे बाँधने से ही काम न चलेगा। आजादी की लड़ाई दरबार की सलामी नहीं है। वह थोड़े से वैरागियों को और हिन्दुओं को दबा देना नहीं है। यह उन अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई है, जिन्होंने सात समुन्दर पार कर अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान में अपना झंडा गाड़ा है।

नवाब वाजिद अली खॉ–लेकिन मैंने तो हिन्दुओं को कभी नहीं दबाया। मैंने तथा मेरे पुरखों ने उन्हें अपना सा माना है। मै तो उनके कृष्ण की पूजा भी करता हूँ, उनका इन्द्र मुझे उसी प्रकार प्यारा है जैसे उन्हें।

अन्य लोग–हॉ हमारे नवाब बहादुर ने हमें हमेशा मुहब्बत की निगाह से देखा है। हम हमेशा इनके साथ है।

नाना साहब–मुझे आपकी एकता पर गर्व है, परन्तु कोई भी संगठन कोई भी प्रतिज्ञा तब तक स्थायी नहीं होती जब तक उसे बाँधने के लिए एक सूत्र न हो। जब तक संगठन सच्चे मन से न हो।

अली नकी–आप ठीक कहते है आप ठीक कहते है। प्यारे भाइयो सुना आपने इस सुझाव को। जब तक हम ईश्वर और 'अल्लाह' का नाम लेकर कसम नहीं खाते, उनकी दुआ नही लेते हम कामयाब न हो सकेंगे। है मंजूर है आप लोगों को इतनी बड़ी कौल, कर देंगे आप अपने मुल्क के लिए इतनी बड़ी कुरबानी।

अन्य सभी–हम अपनी इज़्ज़त के लिए सब कुछ करने को तैयार है।

अली नकी–तो हिन्दू भाइयों तुम मां गंगा की कसम खाकर कहो कि हम अपने मुल्क के लिए मर मिटेंगे, मा गंगा तुम्हारे मन की मैल धो दे, और तुम्हें ताकत दें, मुसलमान बिरादर तुम एक बार फिर अपने 'कुरान' को याद करो जिस कुरान ने तुम्हारी छिटकी हुई ताकत को इकट्ठा करके तुम्हारे अन्दर जेहाद की जिद पैदा की थी, जिसने तुम्हारे बुझते हुए चिराग को रोशन कर दिया था। तुम्हारा आज का जेहाद गैर मामूली है यह अपने फिरके के खिलाफ नही गुलामी के खिलाफ है। अपने भाइयो की गुलामी, गुलामी नही वह तो मुहब्बत का फर्ज है। तुम्हारा आज का जेहाद उस गुलामी के खिलाफ है जिसने हिन्दू और मुस्लिम दो भाइयो को लड़ाकर उनके मुँह की रोटी छीनी है। ऐसी हालत मे भी क्या तुम दोनों इकट्ठा नही हो सकते। आप लोग इसी दम अपनी आजादी के लिए क़सम खाएं कि हम आखिरी सॉस तक लड़ेंगे और इसे हासिल करके रहेंगे।

अन्य सभी–हम सब अपनी आजादी के लिए हँस कर कसम खाएँगे।। अपने

आखिरी दम तक लड़ेगे। (सबसे पहले बेगम हजरत महल ने कुरान की कसम खाई बाद में सभी लोगों ने गगाजी और कुरान के नाम पर कसम ली)

नाना साहब–हमारी लड़ाई का नतीजा चाहे जो हो, लेकिन हमे प्रसन्नता है कि आपने आपसी भेदभाव पर विजय पा ली। अब आप सगठित है आपकी शक्ति अजेय है। मेरी राय है कि आप लोग अपने वेश बदलकर यह सन्देश देश के कोने-कोने मे पहुँचा दे। यह काम आप लोगो से ही हो सकता है। परन्तु ध्यान रहे कि अग्रेजो को हमारा राज मालूम न होने पाये, गौर से सुन लो हमारी क्रांति सारे देश मे एक ही दिन होगी बाइस जून को, हमारा निशान चपाती और कमल का फूल होगा।

आप लोग सावधानी से आगे बढ़े परिणाम हमारे अनुकूल होगा।

(पटाक्षेप)

दृश्य चतुर्थ

(झाँसी, महारानी लक्ष्मीबाई का दरबार सभी लोग यथा स्थान आसीन हैं एक कंचुकी का प्रवेश)

कचुकी प्रवेश करके सर झुकाता है। महारानी की जय हो, देवि द्वार पर एक साधु खडे है दर्शन के अभिलाषी हैं।

महारानी–उन्हे आदरपूर्वक लिवा लाओ।

(कंचुकी के साथ साधु का प्रवेश)

रानी –(आदरपूर्वक) आइए महाराज आसन ग्रहण कीजिए। महात्मन् आपने कैसे दर्शन दिया। यह अभागी आपकी क्या सेवा कर सकती है।

साधु–देवी ऐसा क्यो कहती है तुम्हारी आकृति अभागो की नही, अवतारो की है, महारानी क्या मै आप की हस्तरेखा देख सकता हूँ।

महारानी–सन्त तो ईश्वर के समान होता है महाराज (रानी अपना दायाँ हाथ साधु के सामने बढ़ा देती है)

साधु (दूर से ही हस्तरेखा देखकर)

देवि दुख है कि तुम्हारी भाग्य में सन्तान सुख नही है परन्तु हर्ष इस बात का है तुम्हारी भाग्य रेखा बडी प्रबल है। जो कार्य किसी की सौ सन्तानें नही कर सकती उसे तुम अकेली कर सकोगी। किसी की एक या दो सन्ताने उसकी मृत्यु के पश्चात् श्राद्ध तर्पण करती है किन्तु सम्पूर्ण भारत की सन्तान तुम्हारा तर्पण, स्मरण करेगी तुम्हारी पूजा करेगी तुम अभागिनी किस लिए। तुम्हारा भाग्य अब उदय होने वाला है। यदि एकान्त हो तो मैं कुछ गुप्त बातें भी बता सकता हूँ।

रानी–महात्मन्, यहाँ सब अपने हैं।

साधु–मुझे तुम्हारा विश्वास है, सुनो तुम अपने देश के लिए अपने प्राणों की आहुति कर देने वाली शक्तियो मे से एक हो। तुम्हारा यश ससार मे स्थायी रहेगा। तुम्हारे लिए सब अपने है तुम्हारा जीवन सभी की रक्षा के लिए है। दैवि 22 जून का दिन याद रखना यह बेला तुम्हारे मार्ग का कपाट अनावृत कर देगी तुम्हारी प्रतिज्ञा पूर्ण होगी। (कान मे कुछ धीरे से कहता है)

महारानी–महात्मन् माँ की गोद में अन्तिम श्वास तक लड़ते लडते प्राण त्याग दूँ यही मेरी अतिम अभिलाषा है।

साधु–तथास्तु।

(साधु का प्रस्थान)

(सभी उनकी ओर विस्मयभरी दृष्टि से देखते है)

पटाक्षेप

दृश्य समाप्त।

(दृश्य पंचम)

(मंगल पाडे अपनी छावनी के एक कक्ष मे सो रहा है। वह एक स्वप्न देखता है। यकायक ऑख मीचते हुए उठता है दीवाल पर भारत माँ का चित्र टगा है।)

मंगल पाडे–(स्वगत) यह स्वप्न कैसा, स्वप्न सत्य के सकेत होते है (सोचकर) समझा मैने एक बार प्रतिज्ञा की थी, "यद्यपि मै अत्यन्त दीन हूँ किन्तु ससार को दिखा दूँगा कि एक दीन कोटिशः सम्पन्नो से सुन्दर होता है। (दीवाल पर लगे भारत माँ के चित्र की ओर देखकर) माँ सुन्दरता सुखमय जीवन मे है या आदर्श मृत्यु मे, मृत्यु प्रकृति का ऋण है। इस ऋण को सुन्दर रूप में चुका देना ही सुन्दर है।

माँ दोगी मुझे अवसर इस ऋण को चुकाने का। तुम दयालु हो। तुम्हारा निर्बल शिशु तुम्हें सबसे अधिक प्रिय है। तुम उस पर अवश्य कृपा करोगी। (वह सोचता हुआ उत्साहपूर्वक टहलता है)

फिर लेटकर सो जाता है।

पटाक्षेप

(मगल पाडे सोकर उठता है। सूर्य निकल रहा है। उसका ध्यान सूर्य की ओर जाता है। सूर्य को प्रणाम करता है।)

मगल पाडे–(स्वगत) सहस्त्राशु तुम सर्वदा अरुणिमा के साथ उदय होते हो और अरुणिमा के साथ अस्त होते हो' उदय और अस्त तुम्हारे लिए समान है' भगवन् क्या तुम अपना यह गुण मुझे न दोगे जन्म तो मेरे हाथ मे नही किन्तु क्या मैं देश के लिए

भी अपना उत्सर्ग नहीं कर सकता। माँ के चरणो मे अपना प्राण नही दे सकता। भगवन् तुम मुझे शक्ति दो कि मैं अपने अतिम समय मे भी हॅसते हुए मृत्यु का वरण करूँ। तुम इस दीन की इच्छा अवश्य पूर्ण करोगे। मै आज परेड पर चलता हूँ आज का अवसर मै नही छोड़ूँगा, अपना कर्तव्य अवश्य पूरा करूँगा।

(रग मच से बाहर चला जाता है।)

पटाक्षेप

दृश्य षष्ठम

(दृश्य बैरकपुर छावनी सैनिक परेड के लिए एकत्रित है। सर्जेन्ट ह्यूमन काशन बोल रहा है। वह सैनिको को सबोधित करता है)

ह्यूसन–जवानो आज हम तुमको एक नई चीज सिखाएगा। तुम इन कारतूसो को अपने दॉतो से खोलो। इससे तुम्हारा दो फायदा होगा। पहले तुम्हारा ताकत बढ़ेगा। दूसरे अपने औजारो से तुम्हारा सच्चा मुहब्बत हो जायगा।

एक सैनिक--मगर हम सभी अच्छे वश के लोग है। हम लोग सबकी छुई हुई चीज मुँह मे लगाना पसंद नही करते। हो सकता है उमे किसी ने पैरो से कुचला हो।

सभी सैनिक–हम लोग ऐसा नही कर सकते।

ह्यूसन–(क्रोध मे) यह हुक्म उदूली है डिस्पिलिन का तोडना है। इसकी सजा कोर्टमार्शल है। तुम सब अपना हथियार रख दो।

(कुछ सैनिक हथियार रख देते है, कुछ नही रखते, इधर उधर कानाफूसी होती है। यह शब्द उभर कर आता है। कल का सौदागर आज का शहशाह, चला है राज करने।''

मगल पाडे –(आगे बढ़कर) भाइयो तुम जानते हो, इन कारतूसो में गाय और सुअर की चर्बी लगी है। इससे हमारी ताकत बढ़ जायगी। जिस मजहब के नाम पर मुसलमानो ने अपना सब कुछ कुरबान कर दिया। जिस अहिंसा के लिए महात्मा बुद्ध ने अपना राजपाट छोड़ दिया उसी के विरुद्ध गाय की चर्बी हम अपने मुँह मे लगाएगे। जिस सुअर और गाय की कुरबानी हमारे लिए हराम है, उसी चर्बी से बनी हुई कारतूसो को हम अपने मुँह में लगाएगे। उसे बनाने के लिए तुम्हे अवसर देगे। हम गरीब है तुम्हारे नौकर हैं किन्तु हमारा धर्म तुम्हारा गुलाम नही। हम जिन्दा जी उसकी तौहीन नही देख सकते।

(सैनिको में फुसफुसाहट बढ़ जाती है। सभी क्रोधित से दिखाई पड़ते है)

ह्यूसन –(क्रोध मे) मगल पाण्डे तुम सैनिको को बहकाता है। हम तुम्हे इसकी सजा देगा इसको **कैद कर लो** जो अपनी जगह से हिलेगा हथियार नही रक्खेगा उसे

सूट कर दिया जायगा। हथियार रख दो एक, दो, तीन (सैनिक हथियार नही रखते, फायर)

(फायरिंग शुरू हो जाती है कुछ भारतीय सैनिको पर गोली लगती है। कुछ अग्रेज सैनिक भी घायल होते है। मगल पाण्डे को पकड़ने दो अग्रेज सैनिक बढ़ते है। वे दोनो मगल पाण्डे की गोली का शिकार हो जाते है। मगल पाण्डे लड़ता हुआ बन्दी बना लिया जाता है। फायरिंग के शब्द सुनाई देते है भगदड़ का दृश्य)

पटाक्षेप

दृश्य सप्तम

(एक एकान्त कक्ष कुछ नागरिक एवं सैनिक एकत्रित है। एक नागरिक सैनिक से पूँछता है)

नागरिक—भाई सुना है कि बैरिकपुर छावनी मे बगावत हो गई। इस सम्बन्ध मे आप क्या कोई ताजी सूचना दे सकते है।

सैनिक—हॉ मै उस दिन वही था। सयोग से बचकर निकल आया।

नागरिक – (उत्सुकता पूर्वक) वहॉ क्या हुआ।

सैनिक—सार्जेन्ट ने नए कारतूसो को हमे दातो मे खोलने के लिए कहा, इस पर हम सब लोगो ने एतराज किया।

नागरिक—तब क्या हुआ।

सैनिक—इस पर सार्जेन्ट बौखला गया उसने कहा कि तुम सब लोगो का कोर्ट मार्शल होगा।

नागरिक—तब फिर।

सैनिक—हमारे ल्नि एक सैनिक मंगल पाडे था। बहुत बहादुर था वह। सार्जेन्ट की बात पर उसे गुस्सा आ गया और उसने सभी सैनिको को ललकारा। और बताया कि इन कारतूसो मे गाय और सुअर की चर्बी लगी है।

नागरिक—यह तो बडी अन्धेर है। अंग्रेजो को किसी के धर्म की चिन्ता नही तो क्या सब लोग चुप रह गए।

सैनिक—नही सार्जेन्ट की बात किसी ने नही मानी और उसने खिसिया कर गोली चला दी और

नागरिक – क्या अग्रेज भी मारे गए।

सैनिक—हॉ अग्रेज भी मारे गए और हमारे लोग भी मारे गए।

के साथ आह और मगल पाडे का क्या हुआ

सैनिक (दुख और शोक के साथ) वह तो शेर दिल था। जोश और कुवत की जागती मिसाल था। जो अंग्रेज उसे पकड़ने के लिए नजदीक आए उसकी गोली के शिकार हुए। अंग्रेज सिपाही बड़ी मुश्किल से उसे पकड़ सके (दुख के स्वर में) सुना है जिस दिन उसकी फाँसी हुई उस दिन भी वह खुश था। उसने अपने देश के लिए हँस कर फाँसी का फन्दा अपने गले मे डाल लिया। उसके चेहरे पर जरा सी भी शिकन नही थी हमारे बीच ऐसे कितने लोग है।

नागरिक–धन्य है मगल पाण्डे, और ऐसे सैनिक जो देश के लिए हँस कर अपना बलिदान कर देते है अब क्रान्ति की चिनगारी भडक उठी है। अंग्रेजी घास की टट्टी इसे हरगिज रोक नही सकती।

सैनिक–लेकिन हमे सावधान और संगठित रहना चाहिए, थोडी भी भूल प्राणघातक हो सकती है।

नागरिक–ईश्वर हमारी रक्षा करे।

(पटाक्षेप)

दृश्य अष्ठम

(मेरठ की क्रान्ति–पेड़ो की झुरमुट, एकान्त कुछ व्यक्ति एव कुछ सैनिक एकत्रित है। गढ़ की सी व्यवस्था है। सैनिक सतर्क है।)

नागरिक (सैनिक से) तुम देश के कर्णधार हो तुममे अदम्य उत्साह है। रग रग मे देश का रक्त है फिर भी तुम अचेत क्यो हो? क्या तुमने अपनी आत्मा को भी बेच दिया है। क्या तुम मुर्दों की तरह सब कुछ सहते रहोगे?

सैनिक–मगर मै क्या करूँ। कुछ भाई जो गाय की कुरबानी अपना धर्म समझते है सुअर की चर्बी भी मुँह मे लगाते नही हिचकते। मै क्या करूँ अपने एक भाई के ही खिलाफ कैसे तलवार उठाऊँ।

नागरिक–परन्तु यह गाय और सुअर की कुरबानी नही, यह तो असख्य निर्दोष हृदयो की कुरबानी है। तुम इसे कब तक सहते रहोगे। तुम्हारे मुसलमान भाई तुम से जुदा नही। कौन मुसलमान इनकार करेगा कि अकबर हिन्दुओ का पथ प्रदर्शक नही था। कौन मुसलमान इनकार करेगा कि कबीर हिन्दू, मुसलमान दोनो के लिए सन्त नही थे।

—मुसलमान हिन्दू हुए है और हिन्दू मुसलमान, मगर कब कौन अंग्रेज मुसलमान या हिन्दू हुआ है। तुम अपने को अलग समझते हो यही तुम्हारी भूल है, कमजोरी है। तुम दोनो एक हो जाओ तो मजाल किसकी कि तुम्हारी ओर वक्र दृष्टि से देख सके।

एक मुसलमान–यह सब ठीक है, मगर यह बताओ कि खून किसके लिए बहाए।

नागरिक यह जाकर अपने सुल्तान बहादुर शाह से पूछो वह बताएगे मीर कासिम

और टीपू सुल्तान ने खून वहाया, किसलिए! एक दिन तुम्हारा यह खून खुद सूख जाएगा। तुम जान भी न पाओगे कि वह क्या हो गया। मगर जिसने तुम्हारा खून बनाया, उसे तुम्हारा कहने का हक दिया उस प्यारे वतन के लिए तुम खून देने मे शरमाते हो। अगर तुम्हारा खून देश के लिए नही, तो वह खून नही, मवाद है।

मुसलमान – मुझसे गलती हुई।

नागरिक–गलती काहे की, पहले अकल आ जाय तो झग डा क्यो हो, तकलीफ क्यो हो?

सव–अब तक जो हुआ, सो हुआ, मगर अब हम सभी साथ है। हम दिल्ली जाएगे और अपने वादशाह को गद्दी पर बैठाएँगे।

नागरिक–मगर यह कहने की तरह आसान नही। अभी कल ही तुम्हारे भाई जेल मे बन्द कर दिये गए, उनकी वर्दियॉ उतार ली गई। पहले उन्हे आजाद करो। कल दस मई है, तुम्हारा जोश ठडा न पड जाय।

तुम्हारे पास साधन है। शुरुआत करो जनमत तुम्हारे साथ है।

सव–हम लोग सब कुछ करेगे, सब कुछ करेगे।

(सभी उत्साह के साथ बाहर निकल जाते है।)

पटाक्षेप

दृश्य नवम्

दृश्य एक चतुष्थ, कुछ नागरिक एकत्रित है। एक के हाथ में कुछ पफलेट एवं अखवार है। समय मई 1857)

एक – भाई कोई ताजी खवर है।

दूसरा–तुम्हें नहीं मालूम। बैरकपुर के विद्रोह के बाद यह आग चारो तरफ फैल गई। आजादी के दीवाने आग-पानी की तरह बढ़ते हुए मेरठ पहुँचे। उन्होने वहॉ के जेल का फाटक तोड डाला, वहॉ के कैदियों को रिहाकर दिया।

एक–भाई वाह, यह तो कमाल कर दिया।

दूसरा–यही नही, जेल का फाटक टूटने के बाद सभी कैदी गले मिले, वे हम लोगो के साथ हो गए। सभी वहॉ से दिल्ली जाने के लिए उतावले हो गए थे। दिल्ली चलो, दिल्ली चलो, का नारा आकाश तक गूँज उठा।

एक–तो क्या वे लोग दिल्ली भी पहुँच गए।

दूसरा–और क्या दस मई को मेरठ की जेल का फाटक टूटा और ग्यारह मई

को आजादी का यह काफिला दिल्ली पहुँच गया। दिल्ली के लोगो ने वड़ी गर्मजोशी से इन वीरो का स्वागत किया।

एक–फिर क्या हुआ।

दूसरा–मेरठ मे लोग अपने साथ तोपखाना वारूद भी ले गए थे। अग्रेजो को जान वचाने मुश्किल हो गई। वहॉ ये लोग लाल किले मे गए, और अपने बादशाह वहादुर शाह से आजादी के जग में अगुआई करने के लिए कहा। वादशाह सलामत वखुशी इसके लिए राजी हो गए, और एक बार फिर लाल किले पर अपने वादशाह, वहादुर शाह का झडा फहराने लगा।

एक--यानी हमारा देश आजाद हो गया।

दूसरा--नही यह तो एक कदम है, अभी तो पूरी मजिल वाकी है। हमे वहुत सावधानी से आगे वढ़ना है। हमारी क्राति आगे वढ रही है।

एक–खुदा हाफिज।

(पटाक्षेप)

दृश्य दशम

(दृश्य–गवर्नर जनरल लार्ड कैनिग का दरबार कुछ अग्रेज आफिसर एव अग्रेज सैनिक एकत्रित है। गुप्त मत्रणा हो रही है।)

कैनिग – (अन्य अफसरों से) हमारे सामने एक नाजुक वक्त है। सेना में वगावत शुरु हो गयी है। यहॉ की जनता भी उनके साथ है। यदि हम चालाकी और सूझ-बूझ से काम नही लेगे, तो शिकस्त खा जायेगे। वैरिकपुर विद्रोह हमने दबा दिया है, लेकिन मेरठ हमारे हाथ से निकल गया है, दिल्ली के लाल किले पर वागियो का कब्जा हो गया है। कानपुर और लखनऊ की हालत खराब है। हमारी फौजी ताकत उतनी अधिक नही है, जितनी होनी चाहिए। ऐसी हालत मे हमे यहॉ के लोगो की मदद लेनी चाहिए, छोटे बडे राजो को जायदाद, रियासत, खिताव आदि की लालच दी जानी चाहिए। किसी भी तरह जैसे भी हो, हमे इस पर काबू पाना है।

(लारेंस की ओर मुखातिब होकर)

लारेस – लखनऊ और कानपुर की हालत क्या है?

लारेस–योर हाइनेस, माफ करे इस वार तो हमे बडा धोखा हुआ। मै खुद किसी तरह से बच पाया हूँ। वागियो ने नवाब की बेगम हजरत महल की सिपहसालारी मे आफत मचा दी है। हमे हर जगह मात खानी पड़ रही है।

खानी पड़ रही है मात खानी पड़ रही है यदि तुम इसी तरह से

असावधान रहोगे तो हमे जल्द ही हिन्दोस्तान छोड़ देना पड़ेगा। आज मौत हमारे सिर पर है, हमे उससे जूझना है।

लारेंस–सर, मै पूरी तरह तैयार हूँ लेकिन यह तो वक्त है।

कैनिंग–हमे वक्त को बदलना है, सख्ती से काम लेना है, भेद से, सख्ती से, जैसे भी हो, हमे अपने पाँव इंडिया मे फिर जमाना है। किसी तरह की भी लापरवाही बरदाश्त नही की जायगी।

लारेंस–यस माई लार्ड (सिर झुकाता है)

कैनिंग– (ह्यूरोज की ओर घूमकर) ह्यूरोज हम तुम्हे एक काम सौप रहे है जिसे बडी सावधानी से पूरा करना है। तुम्हे झाँसी जाना है, झाँसी पर अधिकार करना आसान नही। वहाँ की रानी सचमुच देवी है। उसकी एक आवाज पर हजारों अपना सिर देने को तैयार रहते है। उसे सच्चे युद्ध मे नही जीता जा सकता। इसके लिए तुम्हे छल-छद्म सभी तरीकों को अपनाना होगा। अपनी जान को खतरे मे डालकर वहाँ के निवासियो का भेद लेना होगा। उन्हे लालच देकर अपनी ओर मिलाना होगा। तब जाकर कही झाँसी काबू मे आ सकती है। लगा सकते हो अपनी जान की बाजी इस काम के लिए।

ह्यूरोज–यस सर, मै सब कुछ करूँगा।

कैनिंग–ठीक है। अब तुम जा सकते हो।

(कैनिंग कक्ष मे टहलने लगता है।)

पटाक्षेप

दृश्य–(रानी की झाँसी का दरबार, दरबार भरा है सभी वर्ग के लोग है)

रानी–(दरबारियो को सबोधित करती हुई) मेरे देशवासियो मेरे वीर जवानो। इस देश की धरती को अपने वीरो पर गर्व है। क्रान्ति आगे बढ़ चुकी है। लाल किले पर हमारे देश का झंडा फहरा रहा है। मेरठ आजाद हो गया है। लखनऊ मे अंग्रेजो के पाँव लडखड़ा रहे हैं। कानपुर मे इन अत्याचारियो के खून से गगा का पानी लाल हो गया है। हमारी विजय की शुरुआत हुई है। हमे इसी तरह आगे बढ़ना है। किन्तु अंग्रेज बौखलाए हुए है। वे हमारी कमजोरी का हर फायदा उठाएगे। अत हमे आपस मे एकता से रहना है। यदि हममे एकता रही, तो कोई ताकत हमे तोड़ नही सकती। मुझे आप सबका बेहद प्यार मिला है। मेरी विजय, मेरा सम्पूर्ण राज्य आपके बल पर आधारित है। मै तो अपनी आखिरी साँस तक आजादी के लिए लडती रहूँगी। मेरी हर श्वास देश के लिए है। हर तमन्ना आजादी के लिए है। यदि आपका साथ और आशीर्वाद मिला तो अंग्रेजो को एक सबक सिखा दूँगी। मेरे रक्त की एक एक बूद स्वतन्त्रता के लिए दीपशिखा होगी और अंग्रेजो की साम्राज्यवादी नीति के लिए श्मशान की ज्वाला। हो सकता है आज का यह दरबार मेरा आखिरी दरबार हो किन्तु मैं जहा भी रहूँगी आप सबको अपने देश

को, कभी नहीं भूलूँगी। मै अपना आखिरी फर्ज पूरा करूँगी। लड़ते-लड़ते हम कर मरूँगी। सुना है, ह्यूरोज. अपनी सेना के साथ झाँसी पहुँच चुका है। लेकिन हम उसका मन्सूबा पूरा नहीं होने देंगे। मुझे आप सब पर गर्व है। आपका पूरा भरोसा है।

यदि हमारे किसी भाई ने विश्वासघात न किया तो विजय अवश्य हमारी होगी।

आप सब अपने प्राणो का मोह त्यागकर स्वतन्त्रता के इस यज्ञ मे आहुति देने के लिए प्रस्तुत रहे। सगठित रहे, हम स्वतन्त्रता का अपना लक्ष्य अवश्य प्राप्त करेगे।

सभी–(समवेत स्वर) महारानी की जय, महारानी की जय।

पटाक्षेप

[दृश्य निर्जन स्थान हल्के कोलाहल के बीच मातमी धुन पर्दे के पीछे शोकाकुल किन्तु बहुत ही गभीर स्वर उभरता है।]

स्वतन्त्रता का पहला चरण थक गया। इस सग्राम मे अनेक वीर माँ के चरणो मे बलिदान हो गए। स्वतन्त्रतता की दीपशिखा, झाँसी की महारानी लक्ष्मी बाई, अब नहीं रही। लाल किले पर फहराता अपना झडा उतार दिया गया है। हमारे सम्राट बहादुर शाह रगून भेज दिए गए। उनके पुत्रो और पौत्रो को नगे पाँव सडक पर घुमाकर गोली से उडा दिया गया। बर्बरता और अत्याचार अपनी सीमा पार गया है।

काश– यदि हमारे अपने लोगो ने धोखा न दिया होता।

कुछ भी हो स्वतन्त्रता का यह स्वर दबाया नहीं जा सकता। भारत भूमि वीर प्रसू है, हमारे चरण आगे ही बढ़ेगे और हम स्वतन्त्रता अवश्य प्राप्त करेगे।

(धुन बजती रही है प्रकाश बुझ जाता है।)

पटाक्षेप

अंक तृतीय समाप्त

[अंक चतुर्थ]

प्रथम दृश्य

(एक पर्वतीय स्थान। तपोवन सा एक साधु आश्रम, एक तेजस्वी साधु एव अन्य कुछ शिष्य भक्तिभाव से बैठे है। भक्ति की मन्द सगीत धुन बज रही हैं। वातावरण शान्त एव भावपूर्ण है। सहसा प्रथम अक प्रथम दृश्य की महिला का प्रवेश। रूप सज्जा शालीन। मुखमण्डल पर चिन्ता और दुख के भाव स्पष्ट है। उनक आने पर सभी शिष्य आदर पूवक उठ जाते है और मौन अभिवादन करते है। महिला साधु के आसन के पास जाकर श्रद्धा से प्रणामी करती है और क्षण भर सिर नीचा करके खडी रहती है। साधु उन्हे देखकर आदरपूर्वक कहते है।

साधु–देवि, शुभाशीष, आसन ग्रहण करे (देखकर) आज तुम इतनी चितित क्यो हो।

महिला–महात्मन् आप तो सर्वज्ञ है। क्या आपस मरा दुख छिपा है। मेरे पुत्रो ने स्वतत्रता यज्ञ प्रारम्भ किया था, उन्होने प्राणो की आहुतियाँ दी, फिर भी असफल रहे, हमारा देश स्वतन्त्र न हो सका आखिर हम दासता की श्रृखला मे कब तक बंधे रहेगे।

साधु–देवि मुझे भी इसका दुख है। किन्तु एक ही छिद्र के कारण सम्पूर्ण घट डूब जाता है। देश मे वीरो की कमी नही। किन्तु कुछ गद्दार एव देश द्रोहियो ने इस अवसर पर राक्षसो का कार्य किया। किसी पुण्य यज्ञ मे राक्षस विध्वस कार्य करते हैं। अपने थोडे से स्वार्थ के लिए पूरे देश को ले डूबते है। किन्तु अब भी हमे धैर्य धारण करना चाहिए।

महिला–महाराज धैर्य की भी कोई सीमा होती है। आखिर सब कुछ होते हुए भी हम कब तक वन्दी रहेगे।

साधु–देवि, धैर्य, सहशक्ति, शौर्य, दया, क्षमा, सनातन धर्म के बीज मत्र है। धैर्य शक्ति का ही पर्याय है। अशक्त धैर्य धारण नही कर सकता। भारत तो स्वतत्र होगा ही किन्तु भारत की स्वतंत्रता के साथ एक नए मार्ग का सृजन होगा।

अब परमाणु युग आ रहा है। क्रोध, रक्तपात, युद्ध, मानवता के लिए आत्मघाती होगे। अत भारत की स्वतत्रता अपने लिए नया मार्ग प्रशस्त करेगी।

महिला–महाराज वह कौन सा मार्ग है, और कब आएगा।

साधु–देवि काल की गति रुकती नही। हर चक्रवात के पश्चात् शाति आती है। स्वतत्रता सग्राम का एक चक्रवात आया और गया, किन्तु वायु का प्रवाह तो नही रुका। यही शान्ति नई क्रान्ति को प्रस्फुटित करेगी। अब विचार क्रान्ति होगी। भारत की श्वास श्वास में स्वतन्त्रता की लौ होगी। अगणित देशभक्तो, वीरो का बलिदान व्यर्थ नही जाएगा। एक शान्त हुकार ही पराधीनता की श्रृखला तोड़ देगी

महिला–महात्मन् आपकी यह गूढ़ वाते मै नही समझ मकी।

साधु–वात स्पष्ट है भारत की स्वतन्त्रता अव रक्तिम होली के साथ नही, शान्ति के साथ आएगी। हमारे दमन करने वाले ही अव हमारे महायक वनेगे और वे हमे स्वतन्त्र करने के लिए विवश हो जाएँगे। भारत मे एक 'महात्मा' का जन्म होगा जो स्वतन्त्रता का देवदूत होगा। सत्य और अहिसा ही उस महात्मा के अस्त्र होगे, जिससे वह परतन्त्रता का गढ़ तोड़ेगा और फिर स्वतन्त्रता की सुनहरी किरण भारत के आँगन मे वरस पड़ेगी।

महिला– (कुछ प्रसन्न होकर) महात्मन् आप त्रिकालज्ञ हैं। आपका कथन सत्य हो। हमारे पुत्र स्वतन्त्र हो सके और मिलजुल कर रह सके।

(साधु अपना वरद हस्त ऊपर उठाते है उनकी मन्द मुस्कान एवं आशीष के साथ पटाक्षेप होता है।)

(पटाक्षेप)

दृश्य समाप्त

दृश्य दो

(एक प्रारम्भिक पाठशाला की कक्षा। कुछ विद्यार्थी टाट पर बैठे हैं। अध्यापक जी तत्परता के साथ कक्षा मे सब बच्चो को देख रहे है और कुछ निर्देश दे रहे हैं। उन्ही बच्चो मे गाधी जी भी विद्यार्थी के रूप मे है)

अध्यापक– (अपनी कुर्सी के पास खडे होकर) देखो बच्चो, आज अपने स्कूल का मुवाइना है। डिप्टी साहव आएगे। इसलिए खूब तैयारी से रहना कोई गलती न हो, जिससे हमारे स्कूल का मुवाइना गडबडाए, समझे न (सब बच्चो की ओर बेत लपकाते हुए गर्व मे देखते हैं) (सभी बच्चे डर और आदर से सिर झुकाते है)

एक बच्चा–गुरु जी, डिप्टी साहब हम लोगो से कौन सा प्रश्न पूँछेगे।

अध्यापक–यह हमे क्या मालूम। लेकिन तुम लोग तैयार रहना और आने पर शोर मत करना।

एक बच्चा–मास्टर साहब, कुछ तो वता दीजिए, क्या पूँछेगे।

अध्यापक– (कुछ क्रोध मे) क्या पूँछेगे, क्या पूछेगे। अरे कोई रामायण, महाभारत थोडे ही पूँछेगे, या उसे लिखने के लिए तुमसे कहेंगे। अरे यही तुम्हारी कक्षा की किताब का कोई पाठ या उसके माने या उसमें का इमला, और हाँ देखना कोई गलती न होने पाए।

वैसे मै कक्षा मे टहलता रहूँगा और तुम लोगों को इशारा भी करूँगा, लेकिन इशारा समझना और गलती ठीक कर लेना, समझे।

थोडी ही देर मे कक्षा मे डिप्टी साहब आ गए, अध्यापक जी खूब सतर्क हो गए और कक्षा मे डिप्टी साहब का स्वागत किया डिप्टी साहब ने कक्षा को घूमकर ध्यान मे देखा

डिप्टी साहब--हूँ, कक्षा तो बहुत साफ सुथरी दिखाई पड रही है। बच्चे भी अच्छे है।

(अध्यापक जी चापलूसी मे) जी साहब।

डिप्टी साहब-- (एक बच्चे से) बेटे तुम्हारा क्या नाम है?

बच्चा-- (उठकर) जी, महाशय मेरा नाम मोहन दास है।

डिप्टी--ठीक है बैठ जाओ। (वह दूसरी ओर घूमते है और दूसरे बच्चे से पूँछते है) तुम्हारा क्या नाम है जी।

बच्चा (उठकर आदर के साथ) जी, जी मेरा नाम मोहन दास है।

अध्यापक--अजी अपना पूरा नाम बताओ।

बच्चा-- (सकुचा कर) जी, मेरा पूरा नाम मोहन दास कर्मचन्द गाँधी है।

डिप्टी--शाबास बैठ जाओ। (वह घूमकर अध्यापक की कुर्सी के पास तक गए और वहाँ बैठ गए। बच्चो की किताब उठाई और पन्ना उलट कर देखने के बाद बोले) बच्चो मै तुम्हे इमला बोल रहा हूँ, इसे सही सही लिखना। जो बच्चा जितना सही लिखेगा उसे वैसा ही नम्बर मिलेगा और उसी के हिसाब से स्कूल का मुवाइना भी अच्छा लिखा जाएगा। तो मै बोलता हूँ तुम लोग लिखो। (डिप्टी साहब किताब के एक पाठ से इमला बोलते है। डिप्टी साहब इमला बोलते रहते है अध्यापक कक्षा मे टहलते रहते है। बालक गाँधी के पास जाकर रुक जाते है और जूते से कुछ इशारा करते है। गाँधी उसे अनदेखी कर देते है और लिखते रहते है।)

डिप्टी--अच्छा अब इमला समाप्त हो गया। सब बच्चे कलम रख दे और कापिया जमा कर दे।

(बच्चे कलम रख देते है। कापियाँ जमा कर देते है। डिप्टी साहब निरीक्षण करके चले जाते है। अध्यापक उन्हे कक्षा के बाहर पहुँचा कर पुन वापस आ जाते है और गुस्साए हुए सीधे गाधी जी के पास जाते है, डाटते हुए कहते है।)

अध्यापक--क्यो रे मोहना, तुझे मैंने इतना इशारा किया तो भी तूने सही नही लिखा तूने मेरा मुवाइना खराब कराया बुद्धू कही का। (बेत लपकाते हुए गाँधी को मारने का अभिनय करते है)

गाँधी जी--(बेत सहने के लिए हॉथ फैलाते हुए खडे हो जाते है और शात भाव से कहते है) चाहे आप मुझे मार डालिए लेकिन मै सत्य को न छिपाउगा। मेरी माँ ने बताया है कि जब धर्मराज युधिष्ठिर के गुरु ने उन्हे सत्य वद का पाठ पढ़ाया तो वे

उसे सात दिन तक नही याद कर सके जबकि उनके भाइयो ने उसे तुरन्त ही सुना दिया था। मै भी झूठ न बोलूँगा, नकल न करूँगा।

अध्यापक –(ताने के स्वर मे) हूँ, तो तू धर्मराज युधिष्ठिर होने चला है। तुझ जैसे जाने कितने मर गए, पर युधिष्ठिर न हो सके।

(फिर बेत लपकाता है। गाँधी जी हाँथ फैला देते है उनका मुखमडल लाल हो जाता है)

दृश्य समाप्त

दृश्य तीन

(एक चाय की दुकान पर कुछ लोग है, तीन चार लोग जिनकी वेशभूषा अंग्रेजी है, अग्रेजी पढ़े हुए लगते है आपस मे वाद-विवाद कर रहे है)

एक–मै कहता हूँ इन्डिया मे है क्या? सचमुच हिन्दुस्तान भेडिया धसान है। आखिर क्या मैकाले बुद्धू था जो कहता था कि वह दिन हमारे लिए गर्व का होगा जब यूरोपीय शिक्षा मे शिक्षित भारतीय भारत मे यूरोपीय सस्थाओं की स्थापना करेगा।

दूसरा–वास्तव मे हिदुस्तान मे है क्या, यहा का लोग सीधे कपडा पहिनना भी तो नही जानता। पुरा इडिया का लोग पेडो पर रहता था, कच्चा मीट खाता था, एक लगोटी लगा के ठडा साँस ले के मर जाता था। अँग्रेजों ने हमे कपडा पहिनना तो सिखा दिया। डरकर सब लोग हमारी इज्जत तो करने लगा। हमे साहब और बाबू तो कहने लगा।

तीसरा– मेरी भी यही राय है। इडिया मे कौन सी ऐसी किताब है जो हमारे दिल मे खुशी ला दे। मगर इग्लिश ने तो हमे 'क्लबघर' मे मिलना और डॉस करना तो सिखा दिया।

(इसी बीच एक तरफ से सुरेन्द्र नाथ बनर्जी का प्रवेश वे इन लोगो की बहस सुन लेते है और बोल पड़ते है)

सुरेन्द्र नाथ बनर्जी–सच है ऑखो मे चश्मा लगा रहने से सूर्य का तीव्र प्रकाश भी धूमिल दिखाई पडता है।

दूसरा व्यक्ति (घूर कर देखने के बाद) आपका क्या मतलब। आप हम लोगो की बातो मे क्यों बोल पड़े।

सुरेन्द्र– बोल इसलिए पडा कि इन्सान इन्सान से ही बोलता है। शायद जानवर इसान की बाते सुन भी नही सकते और यदि सुन सकते है तो स्वेच्छा से उसे कर नही सकते। मतलब मेरा यह कि जब तक तुम्हारी ऑखो पर अंग्रेजी चश्मा है तुम्हें 'भारत' का दिव्य आलोक नही दिखाई पड सकता। यदि वह तुम्हे रास्ता दिखाएगा तो तुम्हे चश्मे की जरूरत न रहेगी। और यदि तुम उसे देखना चाहते हो तो तुम्हे चश्मा उतारना पडेगा।

डफरिन–मिस्टर ह्यूम, मैं भी आपसे इस सम्बन्ध में राय लेना चाहता हूँ। आपने इस विषय मे क्या सोचा है।

ह्यूम–सर अब इन्डियन कुछ होशियार हो गए है वह राजनीति की बाते समझने लगे है। अत अच्छा होगा कि उसे ऐसे संगठन मे बॉधा जाय कि वह हमारे वफादार भी बने रहे, और अपनी मागो के लिए शातिपूर्वक हमसे बात कर सके।

डफरिन–मै तुम्हारी राय से सहमत हूँ। तुम यह काम करो। मै तुम्हारी मदद करूँगा।

ह्यूम–सर मेरी राय है कि इंडिया मे भी इग्लैड की तरह से एक विरोधी पार्टी हो, जो हमारी कमियो की ओर इशारा कर सके, और हम होशियार हो सके।

डफरिन–तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो। इस तरह की पार्टी आवश्यक है। इस काम मे तुम्हारी मदद की जाएगी।

ह्यूम–थैक्यू सर

(पटाक्षेप)

दृश्य छह

(एक कक्ष गवर्नर अपने कक्ष मे चिन्ताग्रस्त बैठा है। उसने घंटी बजाई एक अर्दली का प्रवेश)

अर्दली (झुककर सलाम करता है।)

गवर्नर–थियोडोर को बुलाओ।

थियोडोर (प्रवेश करके सलाम करता है)

गवर्नर–थियोडोर, मिस्टर ह्यूम की राय से इन्डियन नेशनल कांग्रेस बनाई गई किन्तु अब इन लोगो की हरकत और मॉग अधिक बढ़ गई है। तुम्ही बताओ, क्या ये थोडे से लोग पूरे इंडिया का प्रतिनिधित्व कर सकते है।

थियोडोर–नो सर, इन लोगो ने हमारी ही सहायता से एक नई मुसीबत पैदा कर दी है।

गवर्नर–मुसीबत पैदा कर दी है, अगर अग्रेज बुद्धिमान न होते तो क्या इतने बडे देश को काबू मे कर सकते। मुसीबत में हॉथ पर हाथ रखकर बैठोगे, या कुछ करोगे। अगर यह मुसीबत हमारी वजह से पैदा हो गई है तो क्या हम इसे इन्हीं के द्वारा रफा नही कर सकते।

थियोडोर–कर क्यो नही सकते सर।

गवर्नर–केवल कहकर मौका अच्छा है इनके भाई मुसलमान बहुत दिनो से दबे

है उन्हे अफसोस जरूर होगा। उन्हे उभाडो। ऐसी हालत मे हमारी मदद पाकर ये जरूर हमारे शुभ चिन्तक और मददगार बन जाएंगे। और आखिर मे यह मुसीबत हमारे लिए नही, इन्ही के लिए मुसीबत बन जाएगी।

थियोडोर—सर मै इसकी पूरी कोशिश करूँगा। मैं मुसलमान मौलवियो और नेताओं से शीघ्र मिलकर इस विषय मे कार्य करूँगा।

गवर्नर—सुना है मुसलमानो के नेता सर सैय्यद अहमद खॉ बड़ इन्कलाबी और हुनरमन्द नेता है। तुम इस मामले मे उनकी मदद लो।

थियोडोर—जो आज्ञा, मै सर सैय्यद अहमद खॉ से मुलाकात करूँगा और उन्हे इस बात के लिए राजी करूँगा।

(पटाक्षेप)

सप्तम–दृश्य

(एक सभास्थल, विशाल मुस्लिम बहुल जन समूह, मंच पर सर सैय्यद अहमद खॉ नवाब सलीमुल्ला खॉ, एव अन्य मुस्लिम नेता मुस्लिम लीग की सभा एव अन्य, सर सैय्यद अहमद खॉ जिन्दाबाद के नारे की गूँज)

सर सैय्यद अहमद—प्यारे भाइयो और दोस्तो जमाना तेजी से बदल रहा है लेकिन आप लोगों मे अभी कोई तबदीली नही आई। आपने अब तक इन्कलाब की ओर से अपनी ऑखे बन्द रक्खी। शायद आपको अब भी अपने वतन की याद आती है। ठीक है वतन की याद आनी चाहिए, मगर आँखे बन्द न होनी चाहिए। अंग्रेज हम से जुदा नही है। वे भी हमारी तरह मूर्तिपूजा के विरोधी है। अग्रेज पादरियो ने अकबर पर भी असर डाला था।

एक मुसलमान—गुस्ताखी माफ हो हुजूर, अग्रेज पादरियो ने अकबर पर ही नही हिन्दुओं पर भी असर डाला था। उन पर रहम दिल थे।

सर सैय्यद—तुम्हारा मतलब कि अंग्रेजों ने केवल हिन्दुओं पर ही एहसान किया है। शायद तुम्हारा मतलब फारसी की जगह पर 'वर्नाक्यूलर' को इजलास की जुबान बना देने से है। मगर यह हिन्दुओं की भाषा सस्कृत भी नही है। तुम्हारे और भाई जो फारसी मे माहिर नही है, फारसी में किए जाने वाले इसाफ को कैसे समझेगे। आज का जमाना सस्कृत और फारसी का नही अग्रेजी का है। बिना इसके पढ़े तुम अरब के बाहर की बात नहीं जान सकते। अगर अपनी बातों को अग्रेजों तक पहुचाना है तो उनसे बोलना सीखो, अग्रेजी सीखो, उनकी मदद करो और फिर देखो कि वह तुम्हारी मदद कैसे नही करते। इन मसलो पर आज इस मीटिंग मे हमारे मेहमान नवाब सलीमुल्ला खॉ साहब रोशनी डालेंगे। आप लोगों से मेरी दरखास्त है कि आप नवाब साहब की बातें गौर से सुने और उस पर अमल कर

नवाब सलीमुल्ला खां—अजीज दोस्तो, मैं आपके सामने चन्द अल्फाज पेश कर रहा हूँ, उम्मीद है कि आप उन पर गौर फरमाएंगे।

थोड़े दिनों की बात है जब हमारे अगुआ "जनाब आगा खाँ' वाइसराय लार्ड मिन्टो से मिले थे तो वाइसराय ने इसे हिन्दुस्तान की तवारीख में एक नया जमाना माना था। कुछ लोगो ने कहा था यह एक बहुत बड़ी चीज है। यह लगभग बासठ लाख लोगों को हमारी खिलाफत करने से रोक लेगी। उनका ख्याल दुरुस्त था। हम बागी नही। हम तो अपनी कौम की तरक्की चाहते है। हिन्दुओं की कोशिश से 'इन्डियन नेशनल कांग्रेस की नीव पडी, हमने मुस्लिम लीग बनाई लेकिन हमारे मकसद जुदा नही। जिस तरह से हिन्दुस्तान मे उनके मन्दिर है, हमारी मस्जिदे है उसी तरह से आज इन्डियन नेशनल कांग्रेस और मुस्लिम लीग है। हम दोनो की मंजिल एक है–

"आजादी अमनचैन"

फिर हमने अलग-अलग रास्ते क्यो निकाले जब हमे एक ही जगह जाना है, यह अपनी, अपनी पसन्द है। इससे हमारी ताकत घटती नही बढ़ती है। हमें नई नई सूझ होती है। फिर आज का हमारा रास्ता खुदा तक पहुँचने का नहीं खुदा तो हमारे दिल मे है" आज हमें उस किले से अपनी खोई हुई चीज हासिल करनी है, जिसमे जाने की राह नजर नही आती। हम लोग मिलकर उस किले के अन्दर पहुँचने का रास्ता ढूंढेगे जिससे हमें कामयाबी जल्द हासिल हो सके।

हमे अपनी खोई हुई आजादी हासिल करनी है चाहे जैसे भी हो।

(तालियों की गडगड़ाहट)

पटाक्षेप

दृश्य पचम

(बगाल की सडक का एक चतुष्पथ। अपार विद्यार्थी समूह। इन्कलाब जिन्दाबाद हिन्दु मुस्लिम एक हो और वन्देमातरम के नारे लग रहे है। विद्यार्थियो ने अंग्रेजी पोशाक की एक अर्थी जलाई और तालियाँ बजाई। सामने मंच पर कुछ विद्यार्थी नेता एकत्रित है। एक विद्यार्थी नेता मच से भाषण देता है।)

विद्यार्थी—मेरे साथियो, प्यारे भाइयो. आपने अपनी पढ़ाई छोडकर अपना अमूल्य समय बरबाद किया। क्या इससे आपका नुकसान हुआ। मेरी समझ मे पढ़ाई का उद्देश्य जीवन की समस्याओं पर सफलता पाना है। जीवन को सार्थक बनाना है। सफलता केवल कक्षा मे बैठने से नही मिल सकती, किताबी कीड़ा बनकर अच्छे नम्बर लाने से नही मिल सकती। अच्छा नम्बर लाना बुरा नही, किन्तु अच्छा काम करना, उससे अच्छा है। अपना कदम कक्षा के बाहर निकालकर आज आपने सच्चाई को पहचानने की कोशिश की विद्यालय से निकलने के बाद भी तो आपका यही करना है

अभी आपने एक अर्थी जलाई, और ताली भी बजाई। यह आपने उल्टा किया। अर्थी जलाने के बाद लोग रोते है, किन्तु दुख की बात नही। आपने आज किसी इसान की अर्थी नही जलाई, आपने 'अंग्रेजीपन' की अर्थी जलाई, उस राक्षस की अर्थी जलाई जो आप पर हावी था। कक्षा के बाहर निकलकर हमने अपने आपको पहचाना है। अपनी ताकत को आजमाया है। यह बंगाल की धरती है। 'सुरेन्द्रनाथ बनर्जी', सुभाष चन्द्र बोस इसी धरती की सन्तान है। यह भूमि क्रान्ति मे सबसे आगे है और रहेगी। हमारे देश के वीरो की शानदार परम्परा रही है। हममे कृतज्ञता अवश्य है, पर कायरता कदापि नही।

अठ्ठारह सौ सत्तावन मे स्वतत्रता की शिखा प्रज्वलित करने वाले हमारे अमर सेनानी हम सर्वदा स्मरण रहेगे। स्वतन्त्रता की यह ज्योति हम कभी बुझने नही देगे। कोई भी शासन, कोई भी देश, कोई भी शिक्षा या नीति जो हमारी आजादी को छीनने की कोशिश करेगी, कुचल दी जाएगी, इसी तरह स उतारकर फेक दी जायगी, जला दी जायगी।

हमारी धमनियो मे देश का रक्त है, हमारी युवा शक्ति अजेय है, हमारे रहते हमारे देश का सम्मान लुटे, हम परवशता और दासता झेले, असम्भव है।

आप सब आगे आएँ। अपनी मानसिक दासता और गुलामी को दूर फेक दे। आगे बढ़े, आजादी आपकी प्रतीक्षा में है।

हमारी संगठित शक्ति को कोई पराजित नही कर सकता। चाहे हम हिन्दू हो, चाहे मुसलमान चाहे सिख हो या पारसी अपने देश के लिए हम सब एक है और एक रहेगे। वन्देमातरम्

(तालियो की गड़गड़ाहट पटाक्षेप)

दृश्य नवम्

(दृश्य– काल 1905 बनारस मे काग्रेस का अधिवेशन गोपाल कृष्ण गोखले, बाल गगाधर तिलक आदि अधिवेशन मे है)

सचालक–अब आपके सामने आदरणीय गोखले जी अपने विचार रखेगे। मै उनसे विनम्र प्रार्थना करता हूँ कि वे आएँ और अपने सद्विचारों से हमे अनुग्रहीत करे।

गोखले जी–प्रिय बन्धुओं एव उपस्थित सज्जनो। आपने मुझे यह अवसर देकर अनुग्रहीत किया।

आप सभी विज्ञ एव जागरूक जन है। देश की गतिविधियो से आप भलीभाँति परिचित है। हमारा स्वतत्रता सग्राम 1857 से प्रारम्भ हो चुका है। स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर देश के अनेको सपूत बलिदान हो चुके है। यद्यपि हमारा वह प्रयास पूर्णतया सफल नहीं हो सका। फिर भी स्वतन्त्रता का वह बीज पूर्णतया सुरक्षित और स्वस्थ है। स्वतन्त्रता की शिखा अब हमारे तन और मन में प्रज्ज्वलित है हमारे विचारो में समा गई है, जिसे अब कोई भी शक्ति बुझा नहीं सकती

आपको ज्ञात होगा कि बंगाल के विभाजन के पश्चात् उसमे जो एक महान् सर्वप्रिय जागरण हुआ है, वह हमारी राष्ट्रोन्नति के लिए एक युगान्तर का सृजन करेगा। बंगाल की अनुलंघनीय दृढ़ता ने भारत को अभिनन्दित किया है। हमारी क्रान्ति की सफलता इसी आदर्श के अनुकरण में है।

आशा है हम अपने आदर्श पर बढ़ते रहेंगे और अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

(तालिया, गोखले जी बैठते है)

संचालक–अब मैं माननीय तिलक जी से प्रार्थना करता हूँ कि वे अपने विचार आपके सम्मुख रक्खें।

तिलकजी–(उठकर जन समूह से हाँथ जोडते है) आदरणीय विद्वत् जनों एवं आगत बन्धुओं।

मेरे पूर्व वक्ता ने संगठन की शक्ति को पूर्ण रूपेण स्पष्ट कर दिया है। फिर भी मेरा मातृ-प्रेम मुझे कुछ कहने के लिए प्रेरित कर रहा है।

"जब देवताओं मे प्रथम पूज्य स्थान लेने का प्रश्न आया तो शर्तें रक्खी गई कि जो सर्व प्रथम पृथ्वी की तीन बार परिक्रम करके आ जाएगा उसी को यह स्थान मिलेगा। भगवान् गणेश अपने स्थूल शरीर और स्वल्प वाहन के कारण दौड़ न सके और राम नाम लिखकर उसकी तीन बार परिक्रमा की और प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया। ऐसा क्यों? क्योंकि गणेश जी ने राम नाम की महिमा समझी। उन्होंने दूसरे का वाहन माँगने से अच्छा समझा अपने अन्तर को जगाना।

क्या आपके अन्दर रामनाम की ज्योति नही है। ईश्वर-अल्लाह की शक्ति नहीं है। फिर भी आप निराश क्यो बैठे हैं। अपने बल पर अपने लक्ष्य की प्राप्ति करो।

यह पूर्व और पाश्चात्य की लड़ाई है। आलोक पूर्व ने ही दिया है, प्रतीची ने उसे चुरा किया। उधर जाने पर यह महान ज्योति अंधकार मे परिवर्तित हो गई। क्या वह ज्योति नष्ट हो गई, क्या पाश्चात्य उसे संजो न सके। नही ज्योति कभी नष्ट नहीं होती, पाश्चात्यो ने उसे केवल अपना बना लेने की कोशिश की। उससे हमे अलग करने के लिए अज्ञान का एक बहुत मोटा पर्दा डाल दिया है।

तुम उसे ढूँढ़ो, वह तुम्हें अवश्य मिलेगी। तुम्हारे इस प्रयत्न मे जो कंटक बने उसे तुम उपानहो के नीचे कुचल दो।

स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है हम इससे अलग बहुत दिन तक नहीं रह सकते।

सौभाग्य से आज हमारे इस संघर्ष मे हमारे नेता सुभाष, नेहरू और गांधी जैसे उच्च आत्मशक्ति के महान [illegible] निराश क्यो [illegible], संघर्ष, [illegible] और आत्मशक्ति के बल पर अ[illegible]

गाँधी के नेतृत्व मे हमारी युवा शक्ति दिशाहीन न होकर अपने लक्ष्य पर अग्रसर होगी और वह दिन शीघ्र आएगा जब स्वतत्रता का सूर्य हिमालय को स्वर्णिम किरीट पहनाएगा। (हाथ जोडकर अभिवादन तिलक जी बैठते है तालियो की गडगडाहट)

पटाक्षेप

दृश्य दशम

(समय 1920 असहयोग आन्दोलन नागपुर, गाँधी जी एव अन्य नेता परस्पर विचार विमर्श)

गाँधी जी–भाइयो, हमारे लिए हर्ष का विषय है कि ऐसे अवसर पर भगवान् ने हमे सद्बुद्धि दी, आदरणीय जिन्ना के प्रयत्न से 1916 मे लखनऊ के अधिवेशन मे काग्रेस और लीग के भेदभाव दूर किए जा चुके है। आदरणीय बाल गगाधर तिलक तथा माननीया एनीबेसेंट ने माडरेट और इक्स्ट्रीमिस्टि विचार धाराओं के मनोमालिन्य को दूर कर दिया है। वे होमरूल लीग के पक्ष मे है।

निस्सन्देह, उस ईश्वर–अल्ला के प्रेमसूत्र ने हमे सगठित किया है। जब ईश्वर की प्रेरणा हमारे साथ है तो क्या कारण कि हम लोग कायरो की भाँति "रालेट ऐक्ट" की पूजा करते रहे जालिया वाला बाग के निर्मम हत्याकाड को देखते रहे। मै आपको राय नही देता कि आप तलवार उठाकर युद्ध करे, खून बहाए किन्तु मै आप लोगो से आग्रह करता हूँ कि आप उठे और आगे बढ़े।

"आप असहयोग आन्दोलन करे, आप सत्याग्रह करे।"

एक सदस्य–किन्तु यह सरकार की हुक्म उदूली होगी।

गाँधी–ठीक है। सत्याग्रही थोडी देर के लिए सस्थापित नियम और सत्ता की अवज्ञा करता हुआ सा प्रतीत होता है किन्तु अन्त मे इससे दोनो का आदर ही होता है। जब राज्य का नियम विधि के विधान के विरोध मे आए तो इसकी अवज्ञा व्यक्ति का प्राथमिक कर्तव्य हो जाता है।

सदस्य–ऐसा करने पर हम जेलो मे ठूस दिए जाएगे।

गाँधी–"एक पतित सत्ता के पास भले मानस और नारी के लिए, कारागार के अतिरिक्त और कोई स्थान ही नहीं। बन्दी गृह मे वीरो की भावनाए, वायु के पखो पर उडती है। उसकी अन्तरात्मा प्रस्फुटित हो उठती है।'

सदस्य–लेकिन हमे इतना जोश कहाँ से मिले।

गाँधी–जोश तुम्हारी अन्तरात्मा से मिलेगा। सत्याग्रह आत्मशक्ति का ही पर्यायवाची है। जब मनुष्य भय या प्रलोभन के कारण सत्य नही बोल पाता, झूँठ बोलने की आदत

हो जाती है। अमूर्त सत्य का अस्तित्व नहीं। यह उन्हीं मे दृष्टिगोचर होता है, जो इसे प्रदर्शित करने का प्रयत्न करते है। इस पर प्राणो की बाजी लगा देने को उद्यत रहते है।

कुछ लोग–यदि आपकी यही राय है तो हम असहयोग आन्दोलन करेंगे, सत्याग्रह करेंगे। आपके नेतृत्व मे हमे पूरा विश्वास है, हम आपके निर्देशो का पालन करेंगे।

गाँधी–किन्तु हमारा आन्दोलन शान्तिपूर्ण और अहिंसक होना चाहिए हमे इसमे पूरी सावधानी रखनी चाहिए।

एक व्यक्ति–बापू जी इसका परिणाम चाहे जो हो किन्तु हम अंग्रेजो से असहयोग करेंगे, सत्याग्रह करेंगे।

(पटाक्षेप)

दृश्य एकादश

(न्यायाधीश ब्रूमफील्ड का न्यायालय।)

(न्यायालय भरा हुआ है। गाँधी जी एक कैदी के रूप मे न्यायालय मे लाए जाते है।)

सरकारी वकील–योर आनर, मुजरिम मोहन दास करमचन्द गाँधी उर्फ महात्मा गाँधी उर्फ बापू, हुजूर की इजलास मे पेश है। इन्होने अंग्रेजी हुकूमत से बगावत की है, असहयोग आन्दोलन शुरु करके जनता को हुकूमत के खिलाफ भड़काया है। इनकी वजह से हत्याएं, लूट-पाट और आगजनी हुई। यही इस आन्दोलन के अगुआ है अत सारी जिम्मेदारी इन्ही के ऊपर है। भोले भाले नागरिको को अगर यह न उकसाते तो कुछ न होता अत, योर आनर ये गुनहगार है। इजलास से दरखास्त है कि इन्हे इन जुर्मों के लिए सख्त सजा दी जाय।

जस्टिस ब्रूमफील्ड–गाँधी जी आपको अपनी सफाई में कुछ कहना है।

गाँधीजी–जब राज्य का कानून विधि के विधान के विपरीत हो और जनहित में न हो तो उससे असहयोग करना आवश्यक हो जाता है।

जस्टिस–हूँ, तो तुम अपना जुर्म कबूल करते हो। इस जुर्म मे तुम्हे छह साल के कैद की सजा दी जा रही है। तुम्हारे ऊपर बगावत का इल्जाम साबित है।

गाँधी–"तुम्हारे राज मे इससे बढ़कर मेरे लिए और कोई स्थान ही नही

किन्तु माननीय न्यायाधीश, यदि तुम महसूस करते हो कि वह कानून जिसका तुम पालन कर रहे हो गलत है, और मै निर्दोष हूँ, तो तुम्हारे लिए केवल एक ही रास्ता है कि तुम इस्तीफा दे दो, और इस नीच काम से विरक्त हो जाओ। यदि तुम समझते हो कि वह प्रणाली जिसके चलाने मे तुम सहायक हो, इस देश के लिए अच्छी है तो तुम मुझे कठोर सा कठोर दण्ड दो।"

(न्यायाधीश गाँधी जी को घूरता है पुलिस उन्हे लेकर जेल जाती है

पटाक्षेप

दृश्य द्वादश

(दृश्य—गाँधी जी जेल मे एक अखबार पढ़ रहे है। अखबार पढ़ते-पढ़ते उनका मुखमडल कुछ उद्विग्न हो जाता है। अखबार के शीर्षक सहित निम्नाकित पक्तिया वह जोर से पढ़ते है।)

जातीय वरदान

''ब्रिटिश प्रधानमत्री आदरणीय मैकडनवाल्ड ने कृपा करके भारत के दलित वर्गों के उद्धार के लिए पृथक निर्वाचन प्रणाली की योजना बनाई है। वास्तव मे सरकार की यह नीति भारत के लिए बहुत श्रेयस्कर है।''

गाँधी जी—(अखबार फेक देते है और स्वगत कहते है) भारत के लिए बहुत ही श्रेयस्कर होगा, जाने कैसे सपादक लोग आँख मूँदकर सरकार के मत का समर्थन कर देते है, उनका अपना कोई विवेक नही, उन्हे कुछ पता नही कि भारत का श्रेय किसमे है। '

भारत की सामाजिक और सास्कृतिक एकता को नष्ट करने का यह दूसरा कुचक्र है। मै अग्रेजो की इस दुर्नीति को सफल नही होने दूँगा। मै इसके विरुद्ध अपने प्राणो की बाजी लगा दूँगा। मै आमरण अनशन करूँगा।

(बापू ने दूसरे दिन से ही जेल मे आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया। पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से यह सूचना पूरे देश मे फैल गई। बापू के आमरण अनशन के कुछ दिन बीतने पर एक दिन जेलर उन्हे समझाने आया बापू जी आमरण अनशन पर बैठे है। जेलर प्रवेश करता है।)

जेलर—(जेलर गाँधी जी को प्रणाम करता है और समझाते हुए कहता है।) गाँधी जी आप देश के महान नेता है, आपसे देश को मार्ग दर्शन मिलेगा, और आपसे ही देश की मुक्ति यज्ञ की सफलता की आशा है। यदि आप अकेले जेल मे रहकर आमरण अनशन के द्वारा अपना अन्त कर देगे तो रोशनी चली जायगी और भविष्य अन्धकारमय हो जाएगा।

गाँधी—जेलर साहब, आप भले मनुष्य लगते है, आपकी चिन्ता भी उपयुक्त है, किन्तु भारत मे अनेक ज्योतियाँ है। मै तो उस ज्योति की एक किरण हूँ। भारत का भविष्य कभी अन्धकारमय नही होगा। मै अनशन इसलिए नही कर रहा हूँ कि अग्रेजो का राज छोडकर चला जाऊँगा और उन्हें उनकी मनमानी करने दूँगा, मै अनशन इसलिए कर रहा हूँ कि जब मनुष्य की बाह्य क्रियाएं शिथिल हो जाती है उसकी आन्तरिक शक्तियाँ कार्यशील हो जाती है। मेरा यह अनशन मेरे देशवासियो को सबल देगा, उनमे साहस और सवेदना का उदय होगा और इसके द्वारा अग्रेजो का कुचक्र स्वय निष्फल और निष्प्रभावी हो जाएगा।

जेलर—गाँधी जी आप महान् चिन्तक और विचारक है। मुझे जो उचित लगा आपसे कहा। (जेलर बाहर चला जाता है।)

वापू का अनशन चलता रहता है। एक दिन डा० भीमराव अम्बेदकर जेल म उनसे भेट करने आते है।

(गांधी जी अनशन पर बैठे हैं दुर्बल दिखाई पड़ रहे हैं। कुछ पत्र पत्रिकाए पढ रहे है।)

डा० अम्बेदकर–(गांधी जी के कक्ष म प्रवेश करते है। इनका गला करुणा से भर आया है।) वापू जी आपकी यह पीड़ा मुझसे नहीं देखी जाती। देश के लिए आपने कितने कष्ट सहे है। अब जब हम कुछ आगे बढ़े है। स्वतंत्रता की लड़ाई विजय पर्व की ओर बढ़ रही है तब आपके आमरण अनशन की प्रतिज्ञा कितनी दुखदाई है। विभिन्न समुदायो और वर्गों के बीच आपकी वाणी एकता की रसधारा प्रवाहित करती है, आपके सत्य और अहिंसा की ज्योति हमारा पथ प्रकाशित करती है, वापू यदि आप इस तरह अपने प्राणो का अन्त कर देंगे तो हम कहां जाएगे, भारत के विभिन्न समुदायों और जातियो को एक सूत्र मे कौन बांधेगा।

गॉधी–अम्बेदकर तुम जितने ही विद्वान हो उतने ही दयालु हो। मे जानता हूं तुमसे मेरी यह पीडा नही देखी गई और तुम (गला भर आया) तुम यहां चले आए, तुम सोचो अंग्रेजो की पृथक निर्वाचन प्रणाली की यह दुर्नीति कितनी घिनौनी है। हमारे भाइयों के वीच संघर्ष और ईर्ष्या पैदा करने का कितना मीठा जाल है। जिस एकता और भाईचारे के लिए मैं जीवित हूं उसे अपने जीवन मे छिन्न भिन्न होते कैसे देख सकूंगा।

डा० अम्वेदकर–वापू, यह सच है किन्तु क्या अंग्रेजों के बांटने से हम बंट जाएगे। हमारी सांस्कृतिक चेतना की जड़ें इतनी मजबूत है कि उसे कोई नहीं तोड़ सकता। अंग्रेज उसमे एक व्यवधान डाल रहे है, वापू आप आमरण अनशन की यह प्रतिज्ञा तोड़ दे, आप चले, हमारा पथ प्रदर्शन करे जिससे हम अंग्रेजों का यह इन्द्रजाल समाप्त कर सके। वापू हमे आपकी जरूरत है आप अपना अनशन तोड दें।

वापू– (वापू का गला भर आता है। प्रेमाश्रु आ जाते है।)

अम्वेदकर यदि तुम्हारी ही तरह मे सब होते,.. देश को गुमराह करने वाले बहुत है, किन्तु सच्चा रास्ता दिखाने वाले विरले है। अम्वेदकर, मे जानता हूं कि तुम्हारे सदृश देशप्रेमियों के बल पर हम अपनी आजादी की लड़ाई अवश्य जीत लेंगे, किन्तु हमारी एकता पर कुठारापात करने वाले विषधर जाने कब तक अपना फन उठाते रहेंगे हमे इन विषधरों से अन्त तक जूझना है।

डा० अम्वेदकर–बापू आपके सहारे हम इन विषधरों पर भी काबू पा लेगे भारतीय सास्कृतिक, सामाजिक, और आध्यात्मिक चेतना आपमें मूर्तिमान है, हम इसे लुप्त नही होने देगे।

बापू–(रुंधे गले स) अच्छा अम्बेदकर। यदि तुम्हारी यही इच्छा है तो देश के लिए

मै अभी कुछ दिन और जीऊँगा। तुम्हारे कहने से मै अपना आमरण अनशन समाप्त करता हूँ।

(गॉधी जी अम्वेदकर को गले से लगाते है, अम्वेदकर उन्हे जूस का रस देते है।)

दृश्य समाप्त

दृश्य त्रयोदश

एक चतुष्पथ दो नागरिक आपस मे वातचीत कर रहे हैं।)

एक–भाई एक वात मेरी समझ में नहीं आती। गॉधी जी जहॉ सगठन के देवता है, हिन्दु, मुस्लिम एकता के देवदूत हैं वही सुभाष चन्द्र वोस उनके कृपा-पात्र क्यो न हो सके। देश की स्वतत्रता की उत्कट भावना नेता जी के मन मे है। और उसे प्राप्त करने का अदम्य उत्साह उनकी नसों में है। एक तरह मे 'वापू' और नेता जी के लक्ष्य समान है, किन्तु फिर भी दोनो मे विरोध क्यो है।

दूसरा–यह सव वड़ो की वाते है। इसका निर्णय वही करे। किन्तु यदि तुम पूँछते हो तो मेरे विचार से ''महात्मा'' ने सोचा होगा कि 'सुभाष' अपने है, उन्हें हम किसी प्रकार से रख सकते हैं किन्तु दूसरो की तो आर्जू मिन्नत करनी ही पडेगी।

एक–परन्तु दूसरे आर्जू मिन्नत से भी अपने न हो सके। और हमने अपना भी ख दिया।

दूसरा–क्या कहते हो, अपना भी खो दिया, वह कहीं गायव तो नही हो गया। सिह की भॉति उद्योगी पुरुष जहाँ भी रहता है, अपना स्थान वना लेता है। सुभाष जहॉ भी रहेगे उनके लिए वही स्थान बन जाएगा। वे जहाँ भी रहेगे कहलाएँगे भारत के। रही बात दूसरो के अपने बनने की, तो हो सकता है, हमारी आरजू मिन्नत उनके मन की न रही हो।

एक–बात तो आप ठीक कहते है लेकिन .

दूसरा–अजी छोडो भी ऐसी बाते। ऐसी बाते तो सडक पर चलने वाले रोज करते है। पर सुनता है कौन?

(पटाक्षेप)

दृश्य चतुर्दश

(दृश्य नेताजी सुभाष चन्द्र वोस का कलकत्ता निवास स्थान। भवन का एकान्त कक्ष। कक्ष के चारो ओर एक हल्का परदा लगा है। मॉ दुर्गा की प्रतिमा, एक सुन्दर आसन पर प्रतिष्ठित है। नेताजी प्रतिमा के सम्मुख विचारमग्न एवं गम्भीर मुद्रा में बैठे है। इनकी दाढ़ी वढ़ी है। शरीर पर मौलवी की सी वेशभूषा एक चूड़ीदार पायजामा, और अचकन। मॉ दुर्गा से करबद्ध, नतमस्तव प्रार्थना कर रहे हैं समय मध्य रात्रि पन्द्रह जनवरी 1941)

सुभाष-(प्रार्थना कर रहे है)

"कालाभ्राभॉ कटाक्षैररिकुल भयदॉ मौलिबद्धेन्दुरेखा शखचक्रकृपाण त्रिशिखिमपि करै उर्द्धहती त्रिनेत्राम् सिहस्कधाधिरूढात्रिभुवनमखिल तेजसा पूरयन्तीम्

ध्यायेदुर्गा जयाख्या त्रिदशपतिनुता, सेवितांसिद्धकामै ।'

"मॉ दुर्गे, तुम्हारी ज्योति त्रैलोक्य मे व्याप्त है, तुम्हारी कृपा कटाक्ष से दुष्कर कार्य भी सिद्ध हो जाते है और शत्रुओं का नाश हो जाता है। मेरा भी कार्य दुष्कर है, मेरे मार्ग मे पग-पग पर मृत्यु है।

मेरे सम्मुख आशाओं का अन्तरिक्ष है और पीछे भावनाओं का सागर। मै अपने देश को छोडकर इसी अन्तरिक्ष मे देश की स्वतत्रता की खोज मे जा रहा हूँ। कोई भी देश बिना बाहरी सहायता के स्वतत्र नही हो सका, मै इसी सहायता को प्राप्त करने जा रहा हूँ। सभव है मेरे इस प्रयाण को कुछ लोग देशद्रोह कहे, या स्वार्थ का नाम दे किन्तु मॉ तुम जानती हो कि तुम्हारा यह वत्स कितना निष्कपट है। मुझे सन्तोष है कि मेरे देशवासी मुझमे विश्वास करते है, परन्तु मै उनके विश्वास की पूर्ति घर मे नजरबद रहकर या जेल मे जाकर नही कर सकता। यह बाह्य देशो की सहायता और शुभकामनाओं से ही सभव है। मै अपने देश की स्वतत्रता के लिए, अपना जीवन उत्सर्ग करने जा रहा हूँ। मॉ इस यज्ञ मे तुम्हारा आशीष ही मेरा सबल है।

(मस्तक टेककर प्रणाम करते हैं। भेष बदलकर घर से निकल गए)

(पटाक्षेप)

दृश्य पचदश

दृश्य—लाई लिलिन्थगो का कक्ष। उसके कक्ष में तीन चार अन्य अंग्रेज अधिकारी है। लार्ड लिलिन्थगो एक पत्र पढ़ रहा है। पत्र पढ़ने के बाद वह चिन्ताग्रस्त और गम्भीर हो जाता है। अपने एक अधिकारी से कहता है। काल १९४२)

लिलिन्थगो—सुना आपने, अब हिन्दुस्तानियो ने "भारत छोडो" का नारा दिया है। अभी हम इनकी इस धमकी का मुकाबला करने के लिए काफी मजबूत हैं।

एक अधिकारी—सर यह तो सच है कि इनकी आजादी की लडाई अब जोर पकड रही है लेकिन क्या हम इनकी इस धमकी से "भारत छोड देगे।"

दूसरा अधिकारी—कभी नही। हमने ऐसी कितनी बगावते दबा दी है। अभी हिदुस्तानियो मे इतना दम नहीं कि हमे भारत छोडने पर मजबूर कर दें।

लिलिन्थगो—सुना है उनका अगुआ नेता जी सुभाष चन्द्र बोस देश छोडकर फरार हो गया है

अधिकारी–सर सुभाष गरमदल का नेता है, उसकी गाँधी जी और अन्य नेताओं से नही पटती थी।

लार्ड–यह बात तो सच है किन्तु वह साधारण आदमी नही है। उसका नाम विदेशो मे भी फैल चुका है, इस समय लडाई जारी है। वह बाहर जाकर हमारे दुश्मन देशो से मिलकर बगावत कर सकता है। हमारे लिए अच्छी मुसीबत पैदा कर सकता है।

अधिकारी–सर हिन्दुस्तान मे तो हम हर बगावत को कुचल देगे, अंग्रेजी सल्तनत को कायम रखने के लिए खून बहाना ही पडेगा।

लार्ड– यह तो सच है कि हम भारत को सीधे नही छोडेगे और छोडेगे भी तो इसके टुकडे कर देगे।

एक अधिकारी–यह कैसे सर।

लार्ड–तुम नही जानते। इस देश मे दो जबरदस्त फिरके हैं हिन्दू और मुसलमान। दोनो मिलकर नही रह सकते। मुसलमान के अलावा हिंदुओं मे भी सिख और अछूत दो जातियाँ हैं। यदि इन्हे उभारा जाय तो ये आपस मे लडते रहेगे, और अलग-अलग राज्य मागेगे। हमे यदि भारत छोडना भी पडगा तो हम इनकी इस दुर्बलता का पूरा लाभ उठाएगे। इनके देश को बाट देगे, और ये हमसे नही, आपस मे ही हमेशा लडते रहेंगे।

एक अधिकारी–सर यह तो बडी अच्छी योजना है।

लार्ड–हाँ यह तो हमे करना ही है। इनके आपसी मतभेदो को हमेशा बढ़ाते रहो और इनकी बगावत को सख्ती से कुचलते रहो।

एक अधिकारी–भारत मे तो हम इन पर आसानी से काबू पा जाएँगे, किन्तु बाहर जाकर यदि "सुभाष बागी नेता ने बाहरी सहायता प्राप्त कर ली और उनकी सेनाएँ हमारे खिलाफ आती है तो हमारे लिए बडी मुसीबत होगी।

लार्ड–हमे इसके लिए भी तैयार रहना चाहिए। यदि हम पर बाहरी और भीतरी दोनो ओर से दबाव पडता है तो हम भारत छोडने के लिए सोचेगे, किन्तु इस देश को बिना बाटे नही छोडेगे।

अधिकारी गण–जो आज्ञा सर।

(पटाक्षेप)

दृश्य षष्ठदश

दृश्य–(सुभाष जी ने बाहर जाकर जापान की सहायता से मलाया के भारत कैदियो को मुक्त कराया और सिगापुर में 'आजाद हिन्द फौज' का सगठन किया आजाद हिन्द फौज का दृश्य–नेताजी फौज की सलामी लेते है और फिर फौजियो को सबोधित करते है)

नेताजी–वीर जवानो, मेरे दोस्तो, मेरे देशवासियो, तुम्हारा यह वेश, बलिदान औग उत्सर्ग का वेश है, तुम्हाग यह खून देश का है, और देश की रक्षा के लिए है। आज हम अपने देश से दूर हैं। आज हम अपने देश मे ही गुलाम है। हमारा यह खून परतन्त्रता की वेडी को तोडने के लिए उवल रहा है। तुम मुझे खून दो मै तुम्हे आजादी दूँगा। मै अपने भारत का अभिषेक अपने नौजवानों के रक्त से करूँगा।

इस कार्य मे तुम्हे अनेक बाधाएँ झेलनी पडेगी, हो सकता है तुम्हे खाना न मिले, तुम्हारी रसद काट दी जाय, हो सकता है कि तुम्हे घास खाकर जिन्दा रहना पडे किन्तु तुम्हारे रक्त का एक एक बूंद देशवासियों मे उत्साह पैदा करेगा। तुम्हारे रक्त की एक एक बूँद भारत का स्वर्णिम इतिहास लिखेगी, तुम्हारा बलिदान देश को स्वतत्रता की ज्योति दिखाएगा, क्या तुम इस नए इतिहास के लिए मुझे अपने खून दोगे।

सभी सैनिक–हम अपने देश के लिए सब कुछ करने को तैयार है।

नेता जी–तुम्हागी वीग्ता से ही देश को उजाला मिलेगा और स्वतत्रता की देवी हँसकर हमारा स्वागत करेगी। जय हिद।

(बन्देमातरम बन्देमातरम का सगीत)

(पटाक्षेप)

दृश्य सप्तदश

(एक कक्ष मे दो मित्र आपस मे बात कर रहे है एक के हॉथ मे अखबार है। अखवार कुछ देर ध्यान मे पढ़ने के बाद वह कहता है।)

एक–घटनाएँ नई दिशा की ओर मुड रही है। इतिहास करवट ले रहा है।

दूसरा–क्या आज अखवार में कुछ नई ताजी है।

एक–(अखवार लेकर) देखो क्लीमेंट इटली ने क्या कहा है। प्राय लोगो का विचार है कि अग्रेजो को भारत का ख्याल नही परन्तु क्या यह सच है। यह सच है कि एक समय ''लार्ड लिलिन्थगो'' ने सोचा था कि भारत को बॉट दो तव छोड़ो किन्तु आज हम उनकी विचारधाराओं को शान्त चित्त मे सोचे तो स्पष्ट होता है कि वे भी भारत मे हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए व्यग्र है, ब्रिटिश प्रधानमत्री ने यह स्पष्ट कर दिया है कि 'राष्ट्रीय स्वतत्रता आज भारत की अप्रतिहत मॉग है। इसे चरितार्थ करने के लिए उन्होने एक मिशन भी भेजा है। मेरा विश्वास है कि जाते समय अग्रेज वैसे ही जाएँगे जैसे आए थे। उन्होने जिससे जो लिया था, उसे उसका ब्याज सहित दे जाएगे। अब यह हमारे ऊपर है कि हम मिश्रधन एक जगह रक्खे, या मूलधन और ब्याज अलग-अलग।

दूसरा–हॉ, यह तो सच है कि हमारा देश अब शीघ्र ही स्वतत्र हो जाएगा क्योकि अग्रेजो पर बाहरी और भीतरी दोनो दबाव पड़ रहे है। इधर गॉधी जी और नेहरू जी के सफल नेतृत्व में देश का हर नागरिक हो गया और अब वह अग्रेजी शासन

ो जवरदस्त धक्का देना चाहता है, उधर देशरत्न नेताजी सुभाषचन्द्र बोस "आजाद हिन्द फौज" की स्थापना कर चुके है। जय हिन्द का नारा आकाश को छू रहा है। वाहरी शक्तियॉ भी हमारी सहायता के लिए प्रस्तुत है। यह अग्रेजो के हित में होगा कि वह भारत को स्वतत्रता देकर अपनी बुद्धिमानी का परिचय दे।

एक–अग्रेज तो बुद्धिमान है वह भारत शीघ्र ही छोड देगे और हम आजाद हो जाएँगे किन्तु देखना यह है कि हम कितने बुद्धिमान है क्या हम एक साथ मिलकर रह सकते है या आपस की खाई और लम्वी कर देते है।

दूसरा–आपका मतलव।

एक–मेरा मतलव स्पष्ट है अग्रेजो ने हमारे अन्दर फूट का जो वीज डाला है वह पनप चुका है। काश हम हिन्दू-मुसलमान, सिख, ईसाई एक साथ मिलकर रहते तो हमारा स्वतत्र देश कितना महान होता।

दूसरा–शासन और सत्ता का भूत वहुत उन्मत्त और पागल होता है। सत्ता के लिए लोगो ने कितने जघन्य अपराध किए है, इतिहास इसका साक्षी है किन्तु आपस की लडाई पराधीनता से अच्छी है।

एक–सत्ता की लालच मे देश का विभाजन हमे अनवरत युद्ध की अग्नि मे ढकेल देगा। हमारे सभी श्रम और साधन युद्ध की इस अग्नि मे स्वाहा होते रहेगे। हमारी समन्वित शक्ति क्षीण हो जाएगी।

दूसरा–किन्तु हमें सहारा है गॉधी जी का जिसकी अलख है–

"रघुपति राघव राजाराम

ईश्वर अल्ला तेरे नाम।"

यह देवदूत हमारी शक्ति विखरने न देगा वह अपने प्राणो को देकर भी हमे सगठित रहने का उपदेश देगा।

एक–निश्चय ही गॉधी और नेहरू की सगठित शक्ति स्वतत्र भारत की गरिमा को सभालने मे समर्थ होगी।

दूसरा–यदि सुभाष भी स्वतत्र भारत मे आ जाते।

एक–देखो ईश्वर क्या करता है।

दूसरा–ईश्वर अव हमे शीघ्र स्वतत्र करेगा।

(पटाक्षेप)

अक पचम

दृश्य १५ अगस्त १९४७ स्वतत्र भारत]

दूसरा दृश्य–सर्वत्र स्वतंत्रता का उल्लास और उत्सव एक विराट सभा में नेहरू जी भाषण दे रहे है]

नेहरू जी–भाइयों और बहनो।

आज हम आजाद है। आज से भारत का बच्चा-बच्चा एक स्वतत्र नागरिक है। उसकी तरक्की के लिए दुनिया के सभी दरवाजे खुले है। ऐसे मौके को पाकर हम लोग कितने खुश है।

आप लोगो ने अपने आजाद देश की नुमाइन्दगी मेरे हॉथो मे दी है, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। आजादी के बाद जो कुछ हुआ, अच्छा नही हुआ। हमे पाकिस्तान बॉटना पडा, वह हमारी मजबूरी थी। लेकिन अब यह सोचना कि हम एक दूसरे के दुश्मन है बडी भारी भूल है। हम दोनों भाई है। अलग रहते हैं तो क्या हुआ। हममे सुलह होना जरूरी है। आज पाकिस्तान से हजारो शरणार्थी आते है, वे कहते है कि उन्हे निकाल दिया गया है, उनका घरबार छुडा दिया गया है। हमे उन्हे जगह देनी है, उनके रहने और खाने का इन्तजाम करना है। हमे इसी के लिए सोचना है। दीवाने बनकर अगर हम भी पाकिस्तान की तरह से काम करे, तो अच्छा नही है।

भारत एक पंथ निरपेक्ष राष्ट्र है। यह सदियो से महान् रहा है, सभी मजहब के लोग इसमें आए है और मिलजुल कर रहे है। हमे अपनी इस महानता को कायम रखना है। देखिए हमारे बापूजी हमे क्या समझाते है। वे कहते है हम सब एक ही ईश्वर के बनाए हुए है, उसके एक ही आकाश के नीचे एक ही पृथ्वी पर रहते है हमे इसी बात को समझना है और उस पर अमल करना है।

अगर हम शान्तिपूर्वक रह सके तो बडी खुशी की बात है। हमें आगे बढ़ना है, भारत को मजबूत बनाना है। उसके सूखे और कमजोर शरीर में सुन्दरता और ताकत लाना है। अगर आप लोग हमारा साथ दे तो यह मुश्किल नहीं।

"हमे आशा है कि हम लोग भारत की मर्यादा को कायम रक्खेगे और बापू जी के बताए हुए रास्ते पर चलकर अपने देश का नव-निर्माण करेगे।"

जय हिन्द।

(तालियो की गडगडाहट)

(पटाक्षेप)

अक पंचम - दृश्य तीन

(बिड़ला मन्दिर प्रार्थना सभा, विशाल जन समूह।)

("रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम की धुन बज रही है जन समूह भाव विभोर बैठा है गाधी जी का सभा में प्रवेश सभी लोग खड़े हो जाते हैं गॉधी जी के आसन

ग्रहण करने पर पुन बैठ जाते है। धुन धीरे-धीरे क्षीण होकर बन्द हो जाती है। गॉधी जी सबमे हॉथ जोडकर मौन प्रणाम करते है, भाषण प्रारम्भ करते है।)

गॉधी जी–भाइया और वहनो, मेरे देश के प्यारे साथियो, जव पन्द्रह अगस्त को आजादी का दिन मनाया गया, हम आजाद वन गए, तव दो चार दिन के लिए सव भाई बनकर रहे तो उस वक्त कोई अस्त्रो के लिए कुछ नही कहता था। उस वक्त वफादारी की भी वात नही थी। सव विलकुल ठीक था। आज सव भूल गए कि व भाई है। ''खिलाफत के जमाने मे हिन्दू, मुसलमान, सिख सव एक साथ पडे थे। मै तो गुरुद्वारे मे गया हूँ और मुसलमान भी मेरे साथ आए है। नानकाना साहब का जो वड़ा किस्सा वन गया उस समय मौलाना साहव थे, अली भाई थे, और मै था। सव ऐसा मानते थे कि सिख हो, मुसलमान हो, हिन्दू हो, वे तीनो एक है। जलियावाला वाग मे क्या हुआ। सव पुकार-पुकार और चीख-चीख कर कहते थे कि यहॉ तो सव का खून मिल गया क्योंकि उसमे सब थे। हिन्दू थे, मुसलमान थे और सिख थे। सबका खून मिला। उस वक्त तो वडे जोर से कहते थे, हमारा खून एक हो गया। उसको कौन जुदा कर सकता है। तो आज फिर वह जुदा वन गया। मुसलमान कहता है सिख है वह हमारे साथ मिल नही सकता। सिख कहते है मुसलमानो के साथ क्या मिलना था। क्या गुनाह किया था एक दूसरे का जो एक दूसरे के दुश्मन बन गए। तो मै तो हैरान हो जाता हूँ, मै पडा हूँ, मे जिन्दा रहता हूँ, तो मै तो तीनों का खून आज भी एक है यही मानकर, हो सकता है तो वही सिद्ध करने के लिए। ऐसा चीखते-चीखते ईश्वर के पास रोते-रोते। इन्सान के पास तो मै रोता नही, लेकिन ईश्वर के पास रो सकता हूँ। उसकी मिन्नत कर सकता हूँ क्योकि उसका गुलाम तो मै हूँ। सबको उसका गुलाम बनना चाहिए। पीछे किसी इसान के, किसी क गुलाम रहने की आवश्यकता नही। कहता हूँ कि अगर मै ऐसा कर सकूँ तो जिन्दा रहना चाहता हूँ नही तो ईश्वर मुझे यहॉ से उठा ले। अगर मान ले कि सव मुसलमान गदे है तो क्या हुआ। मै तो आपसे कहूँगा कि हम तो हिन्दुस्तान का समुन्दर ही रक्खे, जिससे सारी गन्दगी वह जाय। हमारा यह काम नही हो सकता कि कोई गदा करे तो हम भी करे।

आज सबका स्वार्थ इसी में है कि हिन्दू, मुसलमान सिख सभी मिलकर रहे, अगर ऐसा नही होता तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनो मर जाते है। नष्ट हो जाएँगे।

ईश्वर के दरबार मे महाला हूँ कि दुष्ट, इसको कोई नहीं जानता मुझको भी पूरा पता नही चलेगा कि मुझमें कितनी दुष्टता भरी है। या किनती साधुता। यह जानने वाला तो राम जी ही है। कोई भी चीज उससे छिपी नही है। इंसान किसी से बदला नही ले सकता, अगर किसी से बुरा भी हुआ है तो उससे बदला क्या लेना।

अभी मेरे पास एक तार आ गया है। तार भेजने वाले लिखते है कि जैसा हिन्दुओं ने किया है, यदि वे वैसा करते तो शायद तुम भी जिन्दा नही रह सकते थे। यह बहुत बड़ी बात हो गई मुझको जिन्दा रखने वाली कोई ताकत है मैं मानता ही नहीं हू, सिव

ईश्वर के। वह जब तक चाहता है मै जिन्दा हूँ और उस वक्त तक मेरा कोई नाश नही कर सकता।

"आज बहुत गिरावट आ गई है, मै यह गिरावट देखना नही चाहता हूँ। मेरी तो ईश्वर से प्रार्थना है कि इससे पहले मुझे उठा ले। अगर हालत न सुधरी तो मेरे दिल मे ऐसा अगार पैदा हो जाएगा जो मुझे भस्म कर डालेगा। मेरा दिल कहता है कि तू इस देखकर क्या करेगा। हिन्दुस्तान की आजादी के लिए तूने अपनी जान कुरबान करने की कोशिश की। जान तो नही गई लेकिन आजादी तो मिल गई। लेकिन आजादी के साथ-साथ तू यह नतीजा देखने के लिए जिन्दा रहकर क्या करेगा।

तो मेरी तो दिनरात ईश्वर से यही प्रार्थना रहती है कि मुझको तो यहाँ से जल्दी उठा ले या मेरे हाथ मे एक बाल्टी रख दे कि उसके मार्फत उस अगार को बुझा सकूँ।

"अगर हम राम राज्य या ईश्वर का राज्य हिन्दुस्तान मे स्थापित करना चाहते है तो मै कहूँगा कि हमारा प्रथम कार्य यह है कि हम अपने दोषो को पहाड जैसा देखे और दूसरो के दोषो को कुछ नही।" मै किसी से डरता नही मै अपनी उसी थोडी सी आशा मे विश्वास करता हूँ जो मेरे अन्दर है। इसके लिए मै अपने मित्र, स्त्री और सब कुछ छोड दूँगा। इसी को सत्य करने के लिए मुझे मरना है।

(पटाक्षेप—गोली की तीन आवाज इसी मे गॉधी जी की हत्या शोर गुल मातम)

दृश्य चतुर्थ

(चतुष्पथ पर चाय की दुकान भीड भाड लोग चाय पी रहे है। सहसा रेडियो से प्रसारण होता है।)

(रेडियो मे नेहरू जी के स्वर)

रोशनी चली गई और अब ॲधेरा ही ॲधेरा है। काश, हम बापू की छाया मे मिल जुल कर बैठ सकते। ईश्वर करे 'बापू' का यह बलिदान हमारी नीद खोल सके, और हम उस महात्मा की पूजा के योग्य बन सके, आपस मे भाईचारे और विश्वास के साथ रह सके।

नहीं तो अविश्वास और मजहब का यह भूत, जाने अभी कितना बलिदान लेगा।

(रेडियो पर मातमी धुन सब अवाक् से रह जाते है। वातावरण शान्त और शोकाकुल)

पटाक्षेप

दृश्य पञ्चम

दूसरा—जब तक मजहब का भूत हमारे सिर पर है, हम स्वार्थ मे अँधे है, तब तक रामराज्य कैसे आएगा।

एक—देश की आजादी के लिए देश के सपूत प्राणो पर खेल गए, काश हम उनके बलिदानो को याद रख सकते, और उनके आदर्शों को अपना सकते।

दूसरा—किन्तु हमारी नीद अब भी नही खुली। भविष्य के गर्त मे जाने क्या छिपा है।

एक—देखो आगे क्या होता है।

दूसरा—खैर अब दिमाग को कुछ हल्का करें। देखो रेडियो पर क्या आ रहा है। (रेडियो खोलता है।)

रेडियो पर गीत –

"आई नई किरण है, आया नया सबेरा

अगडाइयॉ नई ले जागा है देश मेरा

आए यहॉ बहुत से राजे बणिक लुटेरे

शक, हूॅण, यवन कितने दगाइयो के डेरे

हमने हटा दिया है अंग्रेज का बसेरा

ॲगडाइयॉ नई ले जागा है देश मेरा

(2)

जब-जब विपत्ति आई साहस से हम लडे है

मिलजुल के हम रहे है छोटे है, या बडे हैं।

फॉसी के तख्त पर भी हमने है राग टेरा

अगडाइयॉ नई ले जागा है देश मेरा।

(3)

बच्चे लड़े है, बूढ़े लड़ती रही जवानी

'हजरत' लडी है 'जीनत' झॉसी की महारानी

तोड़ा है सबने मिलकर दुश्मन का दुर्ग डेरा

अगड़ाइयॉं नई ले जागा है देश मेरा

(4)

इस देश के रतन है नेहरू सुभाष- गॉधी

जिसने नई दिशा दी नव ज्योति फिर जला दी

यह ज्योति हर दिशा को देगी नया उजेरा
अगडाइयाँ नई ले जागा है देश मेरा।

(5)

मिलजुल के हम रहेगे सुख-दुख सभी सहेगे
भारत है देश अपना, भारत के हम रहेगे
इस ज्योति से न अब फिर पनपेगा घन अँधेरा
अँगडाइयाँ नई ले जागा है देश मेरा।
आई नई किरण है आया नया सबेरा
अगडाइयाँ नई ले जागा है देश मेरा।

पचम अक समाप्त